Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४३
माह- अगस्त २०१८
अङ्क -५ (१८६)
वर्ष -१३ (१८)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं
प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.org

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

पल्लव

❖ **सम्पादकीय :**
- चातुर्मास में धर्म साधना : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणी आर्यि.विचक्षणाश्री माता ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- भाव सहित वन्दे जो कोई... सम्मेद शिखर जी : प.पू.श्री विरागसागर महामुनिराज ६
- देश की राजधानी से सिद्धों की राजधानी में : श्रमणाचार्य शीतलसागर जी महाराज ९
- विशाल पदयात्रा की अनुभूतियाँ १०
- सम्मेद शिखर यात्रा चलते-चलते २२
- शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी की स्वर्णिम एवं ऐतिहासिक भव्य तीर्थ यात्रा- 'न भूतो न भविष्यति' : भंवरलाल जैन संघपति २५
- इतिहास रचा गया : विमल जैन ३३

❖ **प.पू. विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ-**
- दिल्ली से सम्मेद शिखरजी तक की विशाला यात्रा में सहभागिता देने वाले... ३४
- विशाल पद यात्रा के अन्तर्गत सम्पन्न कार्यक्रम ४१
- तीर्थों एवं जिनमंदिरों के दर्शन, धर्मसभा में अभियान के पांच सूत्रों का संकल्प के स्थान व संख्या के प्रमुख नगर ४३
- ८७ पिच्छी, ३९वाँ श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र पावन वर्षायोग २०१८ ४८
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ५३

❖ **कविताएँ**
- सम्मेद शिखर २४

❖ **समाचार** ५५

❖ **विराग वर्ग पहेली** ५८

संपादकीय

चातुर्मास में धर्म साधना

इंजी. आनन्द कुमार जैन

चतुर्मास से जुड़े हुये अनेकों बिन्दु हैं। संतों की साधना का सर्वाधिक महत्व है और श्रावकों के लिये भी प्रतिक्रमण का विधान है। परमपूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज का कहना था कि हाथी को बांधना और साधुओं को सम्हालना दोनों बराबर हुआ करते हैं। साधुओं को सम्हालना यानी उनकी सेवा, उनके नियम उनकी पद्धति के अनुसार चर्या में सहयोगी बनना ये बहुत बड़ी बात मानी जाती है। चारित्रधारी साधकों की संगति से जीवन में चारित्र की सुगंध फैलती है। चातुर्मास में सभी विधान शुरु होते हैं, इसके अलावा रक्षा बन्धन, पर्यूषण पर्व, विजया दशमी, निर्वाणोत्सव होकर फिर कार्तिक महीने का अष्ठानिका पर्व आ जाता है। अष्ठानिका पर्व आठवे दीप नन्दीश्वर द्वीप से संबंध रखता है। इस द्वीप में देव और विद्याधर ही पहुचते हैं मनुष्यों का पहुँचना हो ही नहीं सकता, इसलिये हम भावनाओं के द्वारा दर्शन करते हैं। चातुर्मास सुख शांति एवं अहिंसा जीवन रक्षण की भावना को जाग्रत करता है। साधुजन प्राणी मात्र की रक्षा के लिये चातुर्मास करते हैं संयम की रक्षा के लिये अपने गमना गमन के वे सीमित कर लेते हैं निर्ग्रन्थ मुनि नियम से बहते हुये पानी की तरह होते हैं। बहता पानी रमता जोगी की तरह होते हैं। उनका कोई मठ नहीं होता, कोई स्थाई आश्रम नहीं होता, कोई कुटी नहीं होती, उनका कोई निवास स्थान स्थाई नहीं होता। यह कारण है कि उनकी न तो कोई ड्रेस होती है और न ही एड्रेस होता है न वे कोई मोबाइल रखते हैं न अन्य के मोबाइल से कभी बात करते हैं। इसलिये उनके पास कभी मोबाइल नम्बर भी नहीं मिलेगा। वे निरन्तर चलते रहते हैं अगर नदी का पानी एक जगह एकत्रित हो जाये तो उसकी पवित्रता नहीं रहती वह पानी धीरे धीरे खराब हो जाता है सड़ जाता हैं, पीने लायक नहीं रहता लेकिन जो पानी नदी में बहता रहता है वह पवित्र पीने ग्रहण करने योग्य माना गया है। साधुजन श्रावन वदी पंचमी तक चातुर्मास स्थापना कर सकते हैं। मूलाचार के अन्दर में साधुओं के दस स्थिति कल्प कहे गये हैं उनके एक कल्प मासैक कल्प कहा गया है। प्राचीन काल में साधुजन जंगलों में रहते थे इस कारण चातुर्मास स्थान निरीक्षण के लिये वे एक माह पूर्व से पहुंचते थे और स्थान की सब दृष्टिकोण से शोध खोज करते थे कि ये हमारे अनुकूल रहेगा या नहीं ऐसा शास्त्रों में उल्लेख आया है।

परमपूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाणोत्सव पर बताया कि भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकरों की परम्परा में एक ऐसे तीर्थंकर हैं कि आज मंदिरों में सबसे अधिक मूर्तियाँ देखी जाती है तो वे भगवान पार्श्वनाथ की देखी जाती हैं। कोई भी नगर और मंदिर मे चले जाइये वहां अन्य तीर्थंकर की मूर्ति हो या न हो लेकिन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति न हो यह संभव नहीं हैं। स्त्रोतों में सबसे अधिक स्तोत्र, पूजाओं में सबसे अधिक पूजायें, क्षेत्रों में सबसे अधिक अतिशय कारी क्षेत्र देखे जाते हैं तो भगवान पार्श्वनाथ के देखे जाते हैं। मंत्रों में सबसे अधिक मंत्र यदि देखे जाते हैं तो भगवान पार्श्वनाथ के देखे जाते हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने अपने समय में घनघोर उपसर्ग और घनघोर परीषहों को सहन किया अनेकों अनेक कष्ट सहन किये हैं।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार २९.१०.१९८१)

।। ऊँ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।।

हे आत्मन्! रागद्वेष की प्रणाली को जिसने अपने से नहीं जमने दिया है वह महानुभाव व्यक्ति परमात्मा दो प्रकार के है प्राणि संयम और इन्द्रिय संयम ही संसारार्तव से पार करते आ रहे है। प्राणी की रक्षा करना ही सुन्दरतम है। रागद्वेष के कारण ही संसार में जामन-मरण का दुख उठाते रहते हैं और डरते भी है। राग सब से ज्यादा खराब है और वास्तव में मोह को होने पर राग से ही ७वे नरक में जाना पड़ता है राग की महिमा ही संसार में जामन मरण के महान दुख उठाने पढ़ते है। अत: रागद्वेष की प्रणाली ही खराब है और द्वेष ज्यादा से ज्यादा २४ घड़ी परन्तु द्वेष महानुभावों को शीघ्र नहीं हुआ करता है। अत: यदि तुम अपनी अनुभूति को प्राप्त करने के लिये लालायित स्वरूप है। अत: हे विमलात्मन तुम भी अपनी भावना को राग द्वेष रहितकर परम शान्त होकर आपस में प्रवर्तन करो। पंच परमेष्ठी की भक्ति ही रागद्वेष का नाशकर देने पर ही भक्ति प्रगट हो जाती है तभी परम तपस्या कर तपस्वी आत्म शोधन के अधिकारी हो जाते है।

जिनोपदेश

श्रमणी आर्यिका विचक्षणा श्री माता जी

लघुं मत्वा प्रलापेत बालाच्यापि विशेषत: ।
यत्सारं भवति यद्ग्राह्यं शिलाहारी शिलं यथा।।

अर्थ- जिस प्रकार खेत में से ऊमी (धान्य की बाल) को एक-एक कर संचय करता है कृषक, उसी प्रकार चतुर मनुष्य को सारभूत बातें बच्चों से भी गृहण करना चाहिए। लघु समझकर न्याय युक्त वाती की अवहेलना नहीं करना चाहिए। अब इसी वाक्य/ दृष्टान्त व निरर्थक वाणी से हानि कहते है।

खेरविषये किं न दीप: प्रकाशयति।। १५६।।
अल्पमति वातायन विपरं बहूनुपलम्भयति।। १५७।।
पतिबंरा इव पारार्था: खलु वाचस्ताश्च निरर्थक प्रकाश्यमाना: शपयन्त्यतश्यं जनयितारम्।। १५८।।

अर्थ- जिस स्थान में सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता वहाँ लघु दीप प्रकाश करता है। उसी प्रकार महापुरुष-विद्वान के गम्य न हो वह बात युक्ति लघुवयस्क व लघुबुद्धि वाले ले भी प्राप्त हो जाती है। क्योंकि नन्हा-सा झरोखा भी लक्षवर्ती बड़े-बड़े पदार्थों को दिखाने में सक्षम होते है। बालक या अज भी विशेष युक्ति दर्शा सकता है। अत: इसकी अवहेलना उचित नहीं।

वृथालापं च य: कुर्यात् स पुमान् हास्यतां व्रजते्।
पतिंवरा पिता पद्धदन्यस्यार्थे वृथा ददत्।।

अर्थ- जो मनुष्य निरर्थक वाणी बोलता है उसकी हंसी होती है। जिस प्रकार स्वयं स्वयंवर में पति चुनने वाली कन्या को यदि अन्य के साथ विवाह दे तो वह पिता का आदर नहीं करती।

अरण्यरुदितं तत्स्यात् यन्मूर्खक्ष्योपदिश्यते।
हिताहितं न जानाति जल्पितं न कदाचन।।

अर्थ- मूर्ख को उपदेश देना अरण्य में रोदन करने के समान है। व्यर्थ हैं क्योंकि वह हिताहित का विचार नहीं करता। अत: शुद्धिवन्तों को उससे बात नहीं करना चाहिए।

अश्रोतु: पुरतो वाक्यं यो वदेद विचक्षण:।
अरण्यरुदितं सोऽत्र कुरुते नात्र संशय:।।

अर्थ- अर्थात् जो वक्ता उसकी बात नहीं सुनने वाले के सामने उपदेश करता है वह मूर्ख है क्योंकि निसन्देह वह अरण्यरोदन कर रहा है ? बचन वहीं कहना जहाँ सफल हो।

भाव सहित वन्दे जो कोई ... सम्मेद शिखर जी

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज

णियसुद्धसहाव जुत्ता जे जे जीवा गया सिद्ध।
सिरिसम्मेद गिरि सिहरे, तं तं सिरसा सया वंदे।।

बन्धुओ! हम सभी बड़े भाग्यवान हैं क्योंकि हम जहाँ से अनंतानंत जिनेश्वर मोक्ष गये ऐसी निर्वाण भूमि पर विराजमान है। हम उन सिद्धों का ध्यान, स्मरण करते हैं। उनकी जाप्य करते हैं।

मंगलाचरण में कहा गया-सम्मेदे गिरि सिहरे सम्मेद गिरी के शिखर पर णियसुद्ध सहाव जुत्ता अपनी आत्मा का जो शुद्ध स्वभाव है उसमें लीन होकर जे-जे जीवा हवेही सिद्धा जितने जितने जीव सिद्ध हुए हैं।

तम्-तम् सिरसा सया वंदे उन सभी को प्रत्येक-प्रत्येक सिद्ध को हम सिर झुकाकर के नमस्कार करते है।

आज हम सभी बाह्य जगत में इतने तल्लीन हो रहे हैं कि स्वभाव का पता ही नहीं है। लोग दूसरों की गिनती गिनते हैं। आज का विज्ञान जितनी भी खोज कर रहा है सभी पर पदार्थ की खोज है यदि व्यक्ति इतनी खोज अपनी आत्मा की करे, इतनी मेहनत आत्मध्यान में कर ले तो वह निश्चित ही निकट समय में निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। पदम्पुराण में उल्लेख मिलता है कि रावण शांतिनाथ भगवान के मंदिर में बैठकर स्तुति कर रहा था। भक्ति करते समय उसकी वीणा का तार टूट गया किन्तु उसकी भक्ति का तार नहीं टूटा। ध्यान रखना भक्ति करते वक्त वीणा का तार टूट जाये तो परवाह नहीं करना उसके साथ अपनी भक्ति का तार मत टूटने देना भले बिना वीणा के ही भक्ति करना पड़े। पर बड़े आश्चर्य की बात थी रावण ने बिना वीणा के भक्ति नहीं की उसने तो अपने हाथ की नस निकाल कर वीणा में लगा दी। आज यदि हमें एक चींटी काटती है तो हम पूजा से उठ जाते है लेकिन रावण तो वीर था वह भक्ति से नहीं उठा, तो वहाँ उल्लेख मिलता है कि रावण इतनी तल्लीनता से भक्ति व तपस्या करता था लेकिन उसका उद्देश्य विद्या सिद्धि का था। यदि वह यही साधना आत्म सिद्धि के लिए कर लेता तो उसे नियम से निर्वाण की प्राप्ति हो सकती थी।

व्यक्ति पर पदार्थों के पीछे अनेकों कष्ट, तकलीफें सहन कर लेता है लेकिन परमार्थ के कार्य से डरता है उसमें विचलित हो जाता है सोचिए कैसे निर्वाण की प्राप्ति हो सकेगी?

धन्य हैं वे महान साधक जिन्होंने सम्मेद शिखर से निर्वाण प्राप्त किया। सम्मेद शिखर का कण-कण वंदनीय, पूज्यनीय कहा जाता है यहाँ का कण-कण पवित्र है। आप सभी के सामने सामान्य जल रखा है लेकिन उसकी कोई वंदना नहीं करता है लेकिन वही जल जब गुरुओं के चरणों से स्पर्शित हो जाता है तो आप उसे मस्तिष्क पर लगाते है उसकी विनय करते हैं कहीं वह पैरों में न आ जाये। इतनी विनय एक क्षण के स्पर्शित जल की करते हैं तो फिर जहाँ बैठे उन योगियों ने वर्षो-वर्ष साधना की हो वह स्थान कितना पवित्र होगा। पण्डित भूघरदास जी ने अपनी स्तुति में उन संतों के चरणों की रज मस्तक पर मांगी है। हनुमान जी ने भी राम के दो पद मांगे और उसी में उन्हें सब कुछ मिल गया। उन योगियों की तपस्या से विशुद्ध क्षेत्र पर आज हम सभी भक्ति कर रहे हैं।

आज हम सभी को इस पर्वत की वंदना कठिन लगती है जबकि अभी यह पर्वत मात्र ९ किमी. का है। ९ किमी. में तो भगवान अजितनाथ का मात्र पद्मासन लगा होगा। उनके शरीर की अवगाहना साढ़े चार सौ धनुष की थी अर्थात् १८०० हाथ, लगभग वर्तमान का पूरा सम्मेद शिखर हो जायेगा।

सम्मेद शिखर महात्म्य ग्रंथ में प्रथम अध्याय के २४वें श्लोक में महानरानी लोहाचार्य भगवन् कहते हैं-

एकैकस्मिस्तत्र कूटे, मुक्ता: सिद्धा त्यनन्तका:।
सर्वं शैलवरस्तस्मादयं द्वादश योजन:।। २४।।

यह शिखर जी ९ किमी. का नहीं, १२ योजन का था। चार कोष का एक योजन होता है १२×४= ४८ कोष, और

२ मील का एक कोश होता इसलिए ४८×२=९६ मील, लगभग डेड़ किमी. का एक मील होता है तो १४४ किमी. हुए। इस ग्रंथ के आधार से सम्मेद शिखर १४४ किमी. का था।

सन् २००० में जब हमारे संघ का गया में चातुर्मास चल रहा था तो उसके पास कोलुआ पहाड़ नाम से एक पर्वत है उसकी चट्टानों पर बहुत सारी दिगम्बर प्रतिमाओं के चिन्ह अंकित है तो वहाँ के लोगों ने परिचय दिया था कि यह पर्वत सम्मेद शिखर जी के अन्तर्गत है। मैंने कहा हाँ १४४ किमी. की सीमा तक यह पर्वत है। दूसरी बात यह है यहाँ पर जितने भी प्राणी जन्म लेते है वे सभी भव्य हैं- सम्मेद शिखर जी महात्म्य ग्रंथ में लोहाचार्य ने भी कहा कि-

भव्यराशेः कीड़गपि पापष्ठितत्र तिष्ठति।

एकोनपञ्चाशज्जन्मभव्ये सोऽपि प्रभुच्यते।। २७।।

सम्मेद शिखर के विषय में सभी कहते हैं 'एक बार बन्दे जो कोई ताहि नरक पशु गति न होई' लेकिन यहाँ कहीं भी ये वाल्य लिखे नहीं दिख रहे हैं। यह बात बिल्कुल सही है, लेकिन एक बार का अर्थ है भाव सहित जो एक बार भी वंदना कर ले वह कभी नरक, पशु गति में नहीं जाता है। यदि अधिक से अधिक संसार में परिभ्रमण करे तो मात्र ४८ भव ही करेगा ४९ वें भव में नियम से मोक्ष जायेगा।

लोग प्लेन, ट्रेन, बस का टिकिट काटते हैं लेकिन यहाँ आने वालों ने मोक्ष की टिकिट कटा ली उन सभी का मोक्ष पक्का हो गया। यह पर्वत मोक्ष जाने वाले भव्य जीवों की खान की तरह है। पर इस बात का ध्यान रखें वंदना की मात्र गिनती न करें अरे १०८ नहीं १००८ करो अथवा एक करो पर भाव सहित करो। यदि भाव सहित है तो एक वंदना भी १००८ के बराबर है और यदि भाव सहित नहीं कि तो १००८ वंदनायें एक के बराबर भी फल प्रदान नहीं करेगी। भाव सहित वंदना में बड़ा चमत्कार होता है समवशरण की २००० सीढ़ियों की तरह वृद्ध से वृद्ध, बीमार, शक्ति हीन व्यक्ति भी ऊँ ह्रीं अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमः का जाप्य करते हुए आराम से पैदल वंदना कर लेते हैं।

इस विशाल पर्वत के रक्षक देव को लोग कुछ भी कहते हों लेकिन भूतक नाम का यक्ष इस पर्वत का रक्षक देव है। वह मिथ्यादृष्टि नहीं सम्यग्दृष्टि है भगवान की सेवा में तत्पर रहता है।

जिसकी नरक तिर्यञ्च आयु का बंध हो जाता है वह इस क्षेत्र की सीमा में प्रवेश नहीं कर सकता इसके विषय में राजा श्रेणिक का उदाहरण सभी को ज्ञात है। एक और अच्छी बात हम लोग ध्यान रखें कि कैसे वस्त्र पहनकर वंदना करने से क्या लाभ होता है तो जो व्यक्ति मोक्ष (निर्ग्रथ) को इच्छा रखते हैं तो सफेद वस्त्रों में वंदना करें। जिन्हें पुत्र की अभिलाषा हो वे पीले तथा रोग बीमारी के निराकरण हेतु काले वस्त्र पहनकर वंदना करें। जिसे सभी चाहते हैं ऐसी लक्ष्मी (धन संपदा) की इच्छा रखने वाले लाल वस्त्रों में इस सम्मेद शिखर जी की वंदना करे ऐसा शास्त्रों में विधान है।

बन्धुओ! अनेकों जन्मों के पुण्य का उदय व्यक्ति को तीर्थ वंदना के लिए प्रेरित करता है। तीर्थ वंदना करना, कराना, अनुमोदना करना तीनों ही पुण्य के कारण हैं। जिसमें स्वयं तीर्थं वंदना करना अथवा श्रावकों को कराना सहज हैं। किंतु साधु-संतों को तीर्थ वंदना कराना बहुत कठिन हुआ करता है।

अतीत अनागत के अनंतार्नत एवं वर्तमान चौबीसी के २० तीर्थकर भगवंतों की निर्वाण भूमि जन मन की श्रद्धा आस्था का आलय विशुद्धि का हिमालय, परम, पावन शाश्वत, तीर्थराज भी सम्मेद शिखर जी का एक-एक रोक के दर्शन, पूजन, वंदन का अपने आप में असीम महत्व है।

ऐसे महान तीर्थक्षेत्र की चर्तुविध संघ को वंदना कराने वाले श्रीमान् अशोक कुमार सुराशाही व भंवर लाल जी परिवार ने निश्चित ही असीम पुण्य अर्जन किया है। आज से ५ वर्ष पूर्व अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के पंचकल्याणक में उन्होंने १०८ पिच्छियों को सम्मेद शिखर जी कि यात्रा कराने की भावना प्रकट की और श्रीफल चढ़ाकर उसी समय से श्रीमति शांतिदेवी सुराशाही ने मीठा, घी भंवरलाल जी एवं राकेश जी ने चावल आदि का त्याग निर्विघ्न यात्रा के पूर्ण होने तक किया। इसके

बीच में भी वे प्रतिवर्ष चौका लेकर आते और यात्रा प्रारंभ की स्वीकृति मांगते रहे किन्तु कहीं पंचकल्याणक, कहीं कोई कार्यक्रम आदि के कारण उन्हें यात्रा की स्वीकृति नहीं मिल सकी। २०१७ गाजियाबाद चातुर्मास के पश्चात् तो पूरी कमर कसकर वे मेरे पास आये और बोले- इस वर्ष तो यात्रा कराना ही है, ५ वर्ष प्रार्थना करते-करते निकल गये, जीवन का क्या भरोसा जल्द से जल्द यात्रा हो जाए।

मैंने भी सोचा एक ग्रहस्थ होकर भी ५ वर्ष से घी आदि का त्याग करना बड़ा कठिन होता है। और फिर तीर्थराज की यात्रा शुभकार्य है अच्छे कार्य जल्दी कर लेना चाहिये। मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा- इस वर्ष सम्मेद शिखर की यात्रा अवश्य करेंगे। यात्रा का मुर्हूत निकाला और संघपति की इच्छानुसार २७.२.२०१८ मालुपरा, राजस्थान से यात्रा की शुरुआत बड़े ही उत्सव के साथ हुई।

आज तक यात्रा प्रारंभ का ऐसा उत्सव न कभी किसी ने सुना था, न देखा था। दोनों ही संघपति परिवार में अपार खुशी थी। हाथी, घोड़ा, ऊँट, बग्गियां, बैण्ड तथा दिव्यघोष के साथ विशाल जुलूस अपने आप में अनोखा ही था, सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज का सामूहिक वात्सल्य भोज आयोजित हुआ। यात्रा भिण्ड, बरासों पंचकल्याणक कराती हुई सम्मेद शिखर जी की ओर अनवरत बढ़ती रही।

हमारे महाराज, माताजी ने भी बड़ा साहस किया। ठण्डी, गर्मी, स्वास्थ्य, अन्तराय की भी परवाह उन्होंने नहीं की यहाँ तक की केशलोंच कर उपवास में भी दोनों टाईम विहार किया उसी का यह प्रतिफल है कि चार्तुमास के बाद सम्मेद शिखर जी तक ३७०० किमी. का विहार संघ कर सका। इस तीर्थयात्रा में संघपति परिवारों ने तो बड़े ही श्रद्धा-भक्ति एवं लगन से कार्य किया व तन, मन, धन सब कुछ यात्रा में समर्पित कर दिया।

संघ ने यूं तो चार्तुमास के बाद पूरे ९ माह तक अनवरत विहार किया है, इसमें लगभग ५ माह की इस यात्रा में यात्रा संघ के करीब ५०-६० व्यक्ति प्रतिदिन मौजूद रहे। इनके अलावा भी अन्य-अन्य ग्राम, नगर से व्यक्ति आते जाते रहे जिससे संघ के आहार आदि में कोई कमी महसूस नहीं हुई।

इस विशाल यात्रा में दिल्ली (कुतुबमीनार) से अहिंसा स्थली से अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी-बचाओं-बेटी पढ़ाओ एवं स्वच्छता अभियान भी अनवरत चला। जिससे रास्तें में मिलने वाले नगर के अनेकों मंत्री, विधायक, नगर पालिका अध्यक्ष आदि शासन प्रशासन वर्ग भी लाभान्वित हुआ। तथा लगभग ८०,००० जैन जैनेतर लोगों ने इससे प्रभावित हो जीवन को व्यसन मुक्त एवं शाकाहारी बनाया है। आज सानंद यात्रा समापन और तीर्थ वंदना से सभी को अत्यंत हर्ष व खुशी है। आज अशोक कुमार जी व भंवरलाल जी परिवार का सकल एवं सम्पूर्ण चर्तुविध संघ की तीर्थ वंदना पूर्णता पर सभी को मेरा आशीर्वाद है। आप सभी इसी प्रकार जीवन में पुण्य अर्जन करते रहें।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

देश की राजधानी से सिद्धों की राजधानी में

प्रवचन- श्रमणाचार्य शीतल सागर जी महाराज

जब से में झुमरीतिलैया में आया तभी से दिन में लगभग दस बार सुनता था कि गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का विहार सम्मेद शिखर जी की ओर हो रहा है। मैं सोचता था इतनी भीषण गर्मी में पक्षी भी अपने घोसले से बाहर नहीं निकलते, मुनष्य तो ए.सी., कूलर को छोड़ना ही नहीं चाहता ऐसी भीषण गर्मी से तपती रोड़ पर ऐसे महान तपस्वी ३००० किलो मीटर की यात्रा कर रहे हैं। सच कहें तो आचार्यश्री देश की राजधानी दिल्ली से चलकर सिद्धों की राजधानी सम्मेद शिखर जी में जा रहे हैं।

आचार्य भगवन्- विद्यासागर जी महाराज भी कहते हैं जहाँ संत आते हैं वहाँ सावन हो जाता है और जहाँ से संत जाते हैं वहाँ पतझड़ आ जाता है। आज सुबह प्रवेश के दृश्य को मैं देख रहा था, इतने विशल संघ को देख रहा था लोग तो १०८ लोगों को यात्रा कराकर अपने आपको पुण्यशाली मानते हैं लेकिन ये ऐसे महान संत है जो १०८ साधुओं को लेकर सम्मेद शिखर जी की वंदना करने जा रहे हैं।

ये एक ऐसे कमल (अरविंद) है जो विषय-कषाय के कचड़े से अलिप्त हो मोक्ष की ओर बढ़े। जिस समय बच्चों को कपड़े पहनने की अकल नहीं होती है उस समय आपने कपड़े छोड़ दिये और आज इतने महान संत बनकर झुमरीतिलैया में आये हैं। इनकी तीर्थयात्रा कराना भी महान पुण्य का कार्य है इनके चरणों की सेवा करने वाले भंवरलाल जी, अशोक कुमार जी, महिपाल जी निश्चित ही निकट भव्य मोक्षगामी है। मेरा भी आज पुण्य का उदय है कि इतने महान संत के दर्शन मुझे हो सके-

सूरज की हर किरण रोशनी दे आपको।
फूलो की हर कली खुशबू दे आपको।।
मैं तो कुछ देने के लायक नहीं हूँ।
देने वाला भगवान हर खुशी दे आपको।।

अंत में मैं यही प्रार्थना करता हूँ कि बड़ों के सामने बोलने से मेरी बुद्धि भ्रष्ट न हो और अधिक निर्मल हो जाये ऐसी भावना से आपके चरणों में नमोस्तु-३।

❖❖❖

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.org.**
2. **www.ganacharyaviragsagarwixsite.com/viragsagarji**
3. **Facebook : viragvani**
4. **Email : viragsagarji@gmail.com**
5. **youtube : upsargvijetaguru virag**
6. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

विशाल पदयात्रा की अनुभूतियाँ

शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी मंगल यात्रा मैंने भिण्ड से पू. गुरुदवे की आज्ञा से आशीर्वाद के साथ प्रारंभ की। इतनी बडी यात्रा में चलने की मुझ में शक्ति नहीं थी किन्तु श्री नरेश जी जो अच्छे गुरु भक्त है उनके विशेष सहयोग से यह यात्रा सानन्द सम्पन्न हुई जिन्होंने एक समय शुद्ध आहार लेकर मेरे साथ पूरी पैदलकर यात्रा कराई। पूज्य गुरुदेव का भी मुझे पूर्ण वात्सल्य प्राप्त हुआ उनका आशीर्वाद से मुझे कोई शारीरिक आदि व्याधि भी नहीं हुई। पूज्य गुरुदेव के चरणों में भक्ति पूर्ण नमोस्तु।

श्रमण विश्वलोचन सागर

गंदोदक नहीं चरणामृत

दिनांक १४ जुलाई २०१८ को संघ का रात्रि विश्राम वडानो ग्राम में शासकीय स्कूल में हुआ। पू. गणाचार्य श्री ससंघ के स्कूल में पहुँचते ही ग्रामीण बच्चे, महिलाएं, पुरुष काफी मात्रा में इकटठे हो गये। सभी दूर खड़े-खड़े प्रतिक्रमण व आचार्य वंदना व गुरुदेव की आरती देखते रहे। पप्पू भैया दरिदाबाद वालों उन्हें पू. गुरुदेव के पास जाकर दर्शन करने की प्रेरणा दी तो जो भय संकोच के कारण दूर-दूर खड़े देख रहे थे फिर तो सभी पास आकर गुरुदेव के दर्शन कर अपने धन्य मानने लगे उन्हें अत्यन्त खुशी हुई। रात्रि को विहार में साथ चल रहे श्रावकों द्वारा गुरु भक्ति की गई जिसका सभी ग्रामीणों ने बड़ा आनन्द लिया। प्रात: कालीन स्तोत्रपाठ आचार्य वंदना के वाद संघ का विहार हुआ। तब भी सब लोग दर्शन करने आ गये। एक ग्रामीण महिला स्नानादि कर एक लोटे में शुद्ध प्रासुक जल लेकर आई। पाद प्रक्षालन के लिये थाली आदि नहीं लाई तो साथ चल रहे श्रावकों ने उससे विना थाली के ही पू. गुरुदेव के पाद प्रक्षालन करने को कहा उसने चरणों लोटे से जल की धारा तो कर दी लेकिन वह जो मनोरथ लेकर आई थी शायद उसकी पूर्ती न होने से वह लोटा लिये पू. गुरुदेव के चरणों की ओर झुकी रही गुरुदेव उसके मन बात को समझ गये और उन्होंने अपने पैर का अंगूठा उसके लोटे में डाल दिया और उसे प्राप्त हो गया। गुरुदेव के चरणों का चरणामृत जिसे उसने भक्ति पूर्वक स्वयं भी पिया और सभी ग्रामीणों को भी दिया। पू. गुरुदेव ने सभी को शराब मांस का सेवन नहीं करने की कह अपना मंगल आशीर्वाद दे आगे की ओर विहार किया। ऐसे करूणा की मूर्ति पू. गुरुदेव के चरणों में त्रिवार नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु।

मुनि विहित सागर जी

गुरुदेव के संघ विहार तीर्थंकर सदृश

सुना एवं पड़ा था कि जब तीर्थंकर का विहार होता है तो उसमें देव मनुष्य तिर्यंच आदि सभी जीव शामिल होते हैं लेकिन किसी को किसी प्रकार का कोई कष्ट एवं परेशानी नहीं हेाती क्योंकि ये तीर्थंकर भगवान का अतिशय होता है, जिसमें देवगण एवं चक्रवर्ती राजा आदि उनके प्रकार की सेवा में उपस्थित रहें। ये सब मैंने देखा नहीं सुना-पढ़ा है लेकिन आज इस काल में पूज्य गुरुदेव के साथ विहार कर वही अतिशय वही चमत्कार आज प्रत्यक्ष रूप में देखा। गुरुदेव का जब भिण्ड में श्री सम्मेद शिखर के विहार में चला तो सोचा था इतना लम्बा विहार इतने बड़े संघ ८५ पिच्छी साथ कैसे हो पायेगा लेकिन पूज्य गुरुदेव के चरणों का ऐसा प्रताप रहा कि जैसे-जैसे चरण आगे बढ़ेते गये अतिशय चमत्कार होते रहे जहाँ साधुओं के विहार में साथ चलने को दो व्यक्ति नहीं मिलते वही सैकड़ों एवं हजारों की संख्या में बाल युवा पौड़ महिला एवं साथ चलते थे। जहाँ जहाँ पहुचते वही ग्राम नगर, शहर की भारी जनता गुरुदेव के दर्शन को सुनने को तरसती रहती थी जिसमें सब प्रकार के भेद भाव को छोड़ एक जुट होकर अपने सौभाग्य के जगाते थे जिसमें राजा यानि मंत्री सांसद, विधायक, कलेक्टर, एस.पी., चेयर मेन आदि एवं प्रजा में जैन-अजैन, हिन्दु-मुस्लिम, सिख ईसाई आदि सभी ने लाभ लिया। जिसमें अनेक चमत्कार भी हुये जिसमें मेरा स्वयं का अनुभव रहा कि इतने लम्बे विहार में किसी प्रकार की गर्मी स्वास्थ्य आदि किसी भी समस्या का अनुभव नहीं हुआ। मैं सब गुरुदेव की अतिशय चमत्कार का ही प्रभाव था क्योंकि गुरुदेव ने पहले ही बोल दिया था कि तुम्हें चिंता करने की कोई भी आवश्यकता नहीं सब मुझ पर छोड़ दो सब फिर क्या था। गुरु की महिमा वरनी ना जाय।

श्रमण मुनि श्री विशोक सागर जी

विशाल पदयात्रा की अनुभूतियाँ

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी विशाल पद यात्रा में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव के विशाल संघ ८५ पिच्छी का विहार किसी ग्राम व नगर से होता था एक साथ संगठित रूप से निकलता था तो वह लोगों पर एक अलग प्रभाव छोड़ता था लोग केमरों से मोबाइलों से संघ का फोटो लेते थे। प.पू. गुरुदेव के दर्शनार्थ लगभग १५० से अधिक राजनेता एवं प्रशासनिक अधिकारी पधारे जो पू. गुरुदेव से प्रभावित हो अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान का संकल्प भरकर अभियान में सहभागिता दी। लगभग पूरे विहार में प्रत्येक प्रान्त के पुलिस प्रशासन विहार में साथ चलकर अपना दायित्व निभाया। यह सब पूज्य गुरुदेव के व्यक्तत्व का ही प्रभाव है कि जो एक बार मिलता है वह आपका हो जाता है ऐसे पू. गुरुदेव में शत-शत नमन।

श्रमण विवर्धन सागर जी

तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी की इस विशाल पद यात्रा में प.पू. गुरुदेव से प्रभावित होकर अनेक युवा पू. गुरुदेव से श्रद्धा के साथ जुड़े और केवल जुड़े ही नहीं तो अनेक स्थानों पर राष्ट्रीय विराग युवा मंच का गठन कर नई शाखाओं के माध्यम से पू. गणाचार्य श्री से आशीर्वाद रत्नत्रयधारियों के सेवा वैय्यावृत आहार विहार विना भेदभाव के करने का संकल्प लिया। पू. गुरुदेव पुण्य वर्गणाये सभी को प्रभावित कर धर्म मार्ग में लगने की प्रेरणाएं देती है। पू. गुरुदेव को नमोस्तु-३।

श्रमण विश्वविद सागर

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अद्भुत आत्मवल एवं संकल्प शक्ति से सम्पन्न हैं। पू. गुरुदेव के पैर में चोट लगने से फ्रेक्चर हो गया। डॉक्टरों ने विहार रोककर कुछ दिन आराम करने को कहा अथवा व्हील चेयर से विहार करने का परामर्श दिया। परन्तु अपूर्व आत्मशक्ति के बल पर पैर में दर्द होने पर भी १५०० कि.मी. की यात्रा सानन्द सम्पन्न की तथा सम्मेद शिखर जी की भी ७ वंदना कर अपनी संकल्प शक्ति का परिचय दिया।

मुनि विकौशल सागर

श्री सम्मेद शिखर जी वंदना तो ग्रहस्थ अवस्था में भी की थी पर उस समय लाठी के सहारे से पर्वत चढ़ने में थकावट आती थी और अब की अपेक्षा उस समय उम्र भी कम थी पर इस पू. गुरुदेव के साथ उनके आशीर्वाद से बिना किसी सहारे के अच्छी तरह पर्वत पर चढ गया एवं थकावट भी महसूस नहीं हुई। भारी वर्षा वं तेज हवाओं में भी पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से आनन्द पूर्वक चार वंदन की।

मुनि विश्वनायक सागर

दिल्ली से सम्मेद शिखर जी तक विशाल पदयात्रा लगभग ९ माह में सभी यात्राएं पूर्ण हुई। यात्रा में चाहे कितनी भी थकान हो पर प.पू. गुरुदेव नियमित रूप से क्लास लेते थे। स्वाध्याय लेते थे। साथ ही विहार में क्लास में पढाई गाथाएँ पूछते थे। पू. गुरुदेव ऐसे श्रेष्ठ आचार्य है जो नियमत रूप पंचाचारों का पालन करते हुए पूरे संघ से कराते है।

मुनि विश्वभद्र सागर

दिल्ली से सम्मेद शिखर तक की यात्रा में जहाँ-जहाँ धर्म सभाएँ समाज द्वारा आयोजित की गई। पू. गुरुदेव ने देश नगर मुहल्ला घर परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि हेतु अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता के लिये लोगों को दोनों हाथ उठवा कर संकल्प कराया। नये भारत निर्माण में अच्छा कदम है।

मुनि विश्वभानु सागर

विशाल पद यात्रा में कई वार ऐसी स्थिति बनी कि शाम को विहार करते निर्धारित स्थान तक पहुंचने से पूर्व अंधेरा होने लगा चाहे जंगल हो या खेत हो प.पू. गुरुदेव वही रूक कर रात्रि विश्राम करते थे ऐसी स्थिति में संघपति भी एक दम व्यवस्था बनाने में घवड़ा जाते थे पर पू. गुरुदेव के आशीर्वाद से जंगल में भी मंगल हो जाता था।

मुनि विश्वहित सागर

विशाल मंगल पदयात्रा उत्तरप्रदेश के कुछ ऐसे ग्रामों से निकली जो मुस्लिम बाहुल्य गाँव मिले जिनमें कई मुस्लिम परिवारों ने पू. गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया। मुस्लिम महिलाओं ने अपनी झोली फैलाकर आशीर्वाद लिया।

मुनि विश्वधीर सागर

चलती फिरती यूनिवसिटी है परम पूज्य गुरुदेव श्री

पार्श्वनाथ भगवान के चरणों तक पहुंचने की मंगल पद यात्रा चल रही थी इस विहार के दौरान भी परम पूज्य गुरुदेव गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज का अध्ययन-अध्यापन नहीं रूका वह स्वयं भी कभी २ बजे कभी ३ बजे ही उठकर अपना लेखन करने बैठ जाया करते थे और दोपहर और सुबह विहार में प.पू. गुरुदेव हम शिष्यों के लिये गाथाएँ बताते और याद कराते और विहार में ही गाथाएँ पूछते और हम शिष्य भी याद करते और गुरुदेव के लिये सुनाते।

तभी तो कहते हैं गुरुदेव के संघ को चलती फिरती युनिवर्सिटी ऐसे गुरुवर के चरणों में बाम्बार नमन्।

गुरुचरणानुरागी मुनि विनिमेष सागर

तीर्थ वंदना और समता

समता का एक ऐसा उदाहरण इस विषम दु: वह काल में भगवान पार्श्वनाथ के उपरांत उनके उपासक के रूप में प.पू. उपसर्ग विजेता, राष्ट्रसंत, समतामूर्ति डॉ. गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज के रूप में सारे संत शिष्य और भक्त समूह ने पाया। भगवान पार्श्वनाथ की पूजन में कहा भी है- जितना उपसर्ग सहा उतनी-उतनी समता आई। जितने उपसर्ग सहे उतनी समता आती गयी। धन्य है साधु की समता! हम जब-जब उनके एक-एक उपसर्ग पर विचार करते हैं तो हृदय कांप जाता है कि कैसे सहन किये होंगे। पर जब उपसर्ग टले तब देखा कि समता की विजय महोत्सव सेकम नहीं होता। पूज्य गुरुवर ने हर बार ऐसी कठिन परीक्षा दी है जो अग्नि परीक्षा से कम नहीं है। उपसर्ग और उपसर्गकर्ता हार गये और काश! उनके दिल भी पिघल जाते और ऐसा अनर्थ करने के बाद भी क्षमा, समता और करूणा की त्रिवेणी पूज्य श्री के चरणों में आते तो कुछ तो विवेक आ जाता उन्हें। पर उनकी छोड़ो और नाता जोड़ों पूज्य श्री के चरणों से।

हम वर्तमान के एक संघर्ष से आपको अवगत करा रहे है। जब सम्मेद शिखर तीर्थ की ओर विहार चल रहा था। बीच में पूज्य श्री के पैर में फ्रेक्चर की शिकायत बतायी गई। डॉक्टर ने सलाह दी- पट्टी बांधे ओर पैदल न चलकर व्हील चेअर या ढोली में चलें पर हमारे गुरुवर कहाँ मानने वाले थे। बोले- धीरे सही पर पैदल चलूँगा। कहा नहीं २५०० कि.मी. चले भी। दर्द वगैरह सब सहन किया।

जब सम्मेद शिखर में आगमन हुआ तब वंदना का नम्बर आया। ता. १९.७.२०१८ को ससंघ पहाड़ पर प्रस्थान किया। पहाड़ की रोज वंदना की और पैर ज्यों का त्यों। आखरी वंदना के दिन की पूर्व संध्या में घास बचाने के प्रयास से एक पत्थर पर पैर रखा तो पैर का सन्तुलन बिगड़ा और गिर गये। पैर में भारी सूजन व दर्द वो भी २ घंटे तक फिर हर दिन बारिश होती रही, पर वंदना न रूकी। न दर्द रूका, न बारिश और न ही रूके उपसर्ग विजेता गुरुदेव। हर व्यक्ति क्या संघ के कुछ-कुछ महाराज व माताजी नीचे आते गये और एक लड़का बोला- सब आऊट हो गये वहां टिके रहे तो मात्र उपसर्ग विजेता गुरुदेव। पांव की हालत न देखकर भगवान की भक्ति में ओत-प्रोत तीर्थ भक्त शिरोमणि प.पू. आचार्य महावीर कीर्ति जी (दादा गुरु) की तरह और वंदना कर ली। सबको विस्मय हुआ कि परमात्मा ने इन्हें क्या अलग से शक्ति दे दी है पर नहीं- गुरुवर तो हृदय व तन से कोमल ही है। जरा सी बारिश या सर्दी में जुकाम हो जाता है। पर नहीं छोड़ते अपने कर्तव्य-भक्ति, पंचाचार परायणता तभी तो हर शिष्य व भक्त आपसे परम प्रेरणा व प्रोत्साहन पाकर आप जैसा होना चाहता है।

क्या अपने जैसा बनाएंगे आप, क्या साथ अपने चलाएंये आप।
आपके गुण वैभव का राज क्या है, हम पूछे तो बताएंगे आप?

श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी

विराग एक्सप्रेस का टिकट

कानपुर के आगे परम पूज्य गुरुदेव बढ़े तब पूज्य श्रमणी आर्यिका ज्ञानमति माताजी की जन्म स्थली टिकैत नगर समाज क आग्रह तथा माताजी के गृहस्थ अवस्था के भाई श्रीमान सुभाष जी के विशेष निवेदन व १८ वर्ष पहले गुरुदेव के शिखर जी विहार के समय उन्हें वहाँ ससंघ लाने की हार्दिक भावना को देखते हुए गुरुदेव ने उन्हें सहर्ष स्वीकृति दी तथा

रास्ता बदलकर टिकैतनगर की ओर किया। वहाँ की समाज ने जगह-जगह बैनर, झंडे, कलश बैंड इत्यादि से भव्य स्वागत किया। क्यों न हो, उन्हें लगा मुक्तिपुर ले जाने वाली विराग एक्सप्रेस आ गयी है तो टिकट रिजर्व करा लें। वहीं भरतेश्वरी माताजी एवं नंदीश्वरी माताजी ने भी उत्साह व हर्ष सहित अगवानी में अग्रणी रहीं। पूज्य गुरुवर ने प्रवचन में कहा- १८ वर्ष की इंतजारी पूर्ण हुई। चंदनामति माताजी मिलेगी तो हम कहेंगे आपकी जन्म स्थली होकर आ गये। आहार भी उनके समीप हुआ। चारों ओर खुशहाली का माहौल था।

श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माताजी

निष्प्रमत्त अभीक्षण ज्ञानोपयोगी मम पू. गुरुदेव

शाश्वत सिद्धक्षेत्र तीर्थराज सम्मेद शिखर जी का पावन मंगलमय विहार जीवन के अद्वितीय ऐतहासिक अविस्मरणीय पल-क्षण रहे। यूँ तो कहा जाता है। गुरु एक होते हैं पर जब उन्हें ही गुणों की मुख्यता से देखते हैं तो अनेक रूप भी दिखते हैं। हमने स्वयं तथा अनेकों शिष्यों भक्तों ने अनुभव किया है कि पू. गुरुदेव की चर्चा चर्या, आचरण-उच्चारण, कथनी करनी में एकरूपता है। पू. गुरुदेव हम शिष्यों को कई बार समझाते है कि 'अप्रमत्त गुणस्थान वह प्राप्त कर सकता है जो प्रमाद छोड़ने का पुरुषार्थ करता है' पू. गुरुदेव के जीवन में ये वाक्य प्रेक्टीकल रूप में चरितार्थ है। तभी ३००० कि.मी. के इस भीषण सर्दी गर्मी से पूर्ण विहार में भी जहाँ हम जैसे साधक विश्रान्ति हेतु दोपहर में 'परते थे वहीं पू. गुरुवर पढ़ाते थे' पढ़ते ही नहीं ये यथा समय पर हम लोगों को मूलाचार, गोम्मटसार, कर्मकाण्ड जैसे शास्त्रों को पढाते भी थे। पढ़ाते ही नहीं थे बल्कि अपनी अनुभव पूर्ण पूर्वाचार्याओं प्रणीत लेखनी से शास्त्रसार समुच्चय जैसे लघुकाय (२०० सूत्र प्रमाण) ग्रंथ को लगभग २००० सूत्रों प्रमाण वृहदकाय प्रदान करते रहते थे। हम स्वयं साक्षी रहे चतुर्विध संघ सहित इस ग्रंथ की पूर्णमा पर सिद्धक्षेत्र राजगृही की वह प्रथम गिरी रत्नगिरी जहाँ बादलों ने मोती वर्षा रूप में (बरसाये) तो, सूर्य ने किरणो द्वारा और वायु ने मंद-मंद प्रवाह द्वारा तथा भक्तों ने घण्तानाद, छत्र, चमर लगा कर एक साथ प्रसन्नता को प्रकट किया। ६.७.२०१८ को पुनीत दिन माँ सरस्वती की गोद को वृद्धिंगत कर चिरस्थायी उपलब्धि प्रदान कर गया।

वहीं दूसरी ओर जब हम शिष्य प्रार्थना करते कि हे गुरुदेव! आज स्वाध्याय क्लास कम पढ़ायें अधिक विहार किया तो पू. गुरुदेव कहते थे स्वाध्यायादि से थकान नहीं आती बल्कि आनंद आता है और थकान तो दूर भाग जाती है।

धन्य है ऐसे निष्प्रमत्त, अभीक्षणज्ञानोपयोगी गुरुदेव जिसका हमें सौभाग्य ही नहीं गौरव हैं कि हमें इस कलयुग में भी महान गुरुदेव की छत्रछाया प्राप्त हो रही है।

श्रमणी आर्यिका विविक्तश्री माता जी

गुरु नाम से शुरु

गुरुभक्ति से मुक्ति मिलती है जो गुरु भक्ति में तल्लीन रहते हैं उनके गुण, तप, शील, आत्म विशुद्धि इत्यादि में वृद्धि होती है। ऐसे साधक अन्य साधकों के लिए आदर्श बनते हैं।

धन्य हैं ऐसे महासाधक चर्या चूड़ामणि राष्ट्रसंत, डॉ. प.पू. गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज जिनके जीवन में अगाध गुरु भक्ति परिलक्षित होती है। उनके मुख पर ही नहीं चर्या में यह सार्थक है।

हमने उनके साथ सम्मेद शिखर विहार का आनंद व सौभाग्य प्राप्त किया। जब यहाँ अगवानी हुई तब अनेक श्रद्धालु धर्मात्मा शोभा यात्रा में शामिल हुए। बादल रिमझिम बरसे, मानों मेघकुमार देव प्रसन्न हुए हैं। लोग कहते- यहाँ ऐसी भव्य अगवानी प्रथम बार देखने मिली। धर्म की हुई अपूर्व प्रभावना।

गुरुवर सर्वप्रथम अपने श्रद्दय, निमित्तज्ञानी प.पू. आचार्य श्री १०८ विमल सागर जी महाराज के समाधि स्थल पर ससंघ पहुंचे और दर्शन वंदन परिक्रमा अभिवेन शांतिधारा का लाभ लिया न सब जनों को दिलाया। प्रथम गुरु वंदना की। यह बात उल्लेखनीय है। पुन: जब तीर्थराज की वंदनार्थ जाना था तो भी वहीं से शुरुआत की, अनुभवि ली, गुरुदेव! संघ सहित निर्विघ्न यात्रा संपन्न हो, आशीर्वाद दें। ऊपर वे ४ दिन ठहरे पैर तो विहार में ही फ्रेंक्चर हो गया था वहाँ अचानक घास को

बचाने के प्रयास में पैर मोड़कर रखा तो गिर पड़े। पुन: सूजन, २ घंटे का असहनीय दर्द शुरु हो गया। पर अडिग रहे उपसर्ग विजेता, और फिर भी वंदना चलती रही। ७ वंदना पूरी की। सातवां है मोक्ष तत्व। ७ वंदना का तात्पर्य है- मुक्ति के साथ फेरे। सात फेरे का मतलब है साथ पक्का। उनकी मुक्ति वैसे ही पक्की है। सर्टिफिकेट और पा लिया। यहाँ भव्य, सम्यग्दृष्टि ही वंदना कर पाते हैं और आप तो भव्य सम्यग्दृष्टियों के सरताज हैं। गुरुदेव विमल सागर जी की छत्र छाया व गौरवमयी आशीष भी आपके साथ है। हम भी ऐसी गुरुभक्ति में कदम बढ़ाएँ ऐसा आशीर्वाद दें।

श्रमणी आर्यिका विनीतश्री माता जी

काली घटायें उड़ गई

बारावंकी से दरियाबाद की ओर विहार प्रारंभ हुआ संघ का औरिलयपुर में रात्रि विश्राम हुआ। वहाँ मात्र एक छोटा सा घर था उनकी छत पर आर्यिका संघ ठहरा। पूज्य गुरुदेव मुनिसंघ सहित एक खेत में रूके। अर्धरात्रि को अचानक काली-काली घटाओं ने चांद को छिपा लिया। तुफानी हवा से खेत की मिट्टी सभी की आंखों में जाने लगी, इधर खेत के करीब के वृक्ष तेज हवा से मानों गिरे ही जा रहे हो। सभी लोग उठकर बैठ गये, व्यवस्थापकगण घबरा गये, अब क्या होगा? पानी बरसा तो संघ कहाँ जायेगा। सभी ने पूज्य गुरुदेव के पास आकर प्रार्थना की गुरुदेव दया करो। सभी की नैया आपके हाथ में है इतने में ही चमत्कार हो गया जिन तूफानी हवाओं से सभी घबरा रहे थे वे ही हवायें काली घटाओं को उड़ाकर अन्यत्र ले गई। मौसम स्वच्छ हो गया तब व्यवस्थापकों ने शांति की श्वांस ली तथा कहा- यह सब गुरुदेव की महिमा है अन्यथा तो आज रात्रिभर सभी को भीगना पड़ता।

श्रमणी आर्यिका विरतश्री माता जी

जैनेतरों की भक्ति

श्री सम्मेद शिखर जी की इस विशाल पद यात्रा में जैनेतर भक्तों की भक्ति का रूप ही कुछ अलग था। रास्ते में चलते समय अलगडीहा ग्राम में संघ पहँचा, मेनरोड घूमी हुई थी अत: सभी को गांव के बीच से सही रास्ता समझ में आ रहा था किन्तु किसी को उस रास्ते का परिज्ञान नहीं था इतने में ही गांव के एक सज्जन सपरिवार गुरुदेव के दर्शनार्थ आये और साष्टांग नमस्कार किया। आगे का रास्ता भी उन्होंने बताया। संघ आगे निकल दूसरे- गांव में पहुँचा तो वे पुन: अपनी एक बहू को लेकर आये बोले ये इसने दर्शन नहीं कर पाये थे। ऐसी थी जैनेतरों की भक्ति।

श्रमणी आर्यिका विरदश्री माता जी

गुरुदेव झोली भर दे

अभी तक तो लोगों को भजन में गाते सुना था-

भरदे रे गुरुदेव झोली भरदे-भरदे,
आया में दर्शन को, हो आया में दर्शन को।

लेकिन शिखर जी के विहार में यह दृश्य साकार देखने को मिला अलगडीह ग्राम में आगे एक ग्राम मिला जिसमें कुछ महिलायें गुरुवर के दर्शनार्थ खड़ी थी लेकिन वे सभी अपनी झोली फैलाकर खड़ी थी मानों उन्हें पता हो कि ये वो दरवार है जहाँ बिना मांगे ही झोली भर जाती है। उन महिलाओं को देखकर बड़ा अश्चर्य हुआ, कि दर्शन की ये कौन सी मुद्रा है तभी किसी ने कहा- अरे उन्होंने मौन रहकर ही अपनी सारी मनोकामनायें पूर्ण होने का वरदान मांग लिया है। सच भी है जो सच्चे दिगम्बर संतों से नमस्कार कर लेता है उसकी सभी इच्छायें स्वत: ही पूर्ण हो जाती है।

श्रमणी आर्यिका विभक्तश्री माता जी

पहली बार इतना उत्याह

सिद्धक्षेत्र नवादा की बकल समाज प.पू. गुरुदेव के पदार्पण की प्रार्थना हेतु कुण्डलपुर क्षेत्र पहुंची। संघ की सुव्यवस्थित आहार चार्य देख वे सब इतने आकर्षित हुए के नवादा पहुंचने तक उन्होंने प्रतिदिन आहार विहार, वैय्यावृत्ति

इत्यादि में उत्साह से भाग लिया। नवादा पहुंचने पर तो देखते ही बनता था। आबाल वृद्धो द्वारा भव्य अगवानी चौके में आहार देने वालों की लाईन, वैय्यावृत्ति हेतु उत्सुक युवा वर्ग, विहार में सबका साथ में आना इत्यादि भक्ति देखकर समिति ने कहा- पहली बार इतना उत्साह समाज में देखा। हे गुरुवर यह सब आपके चरणों का चमत्कार है। पूज्य गुरुवर बोले नहीं, सब भगवान के चरणों और क्षेत्र का प्रभाव है। आप सब मुनियों की ऐसी भक्ति करें।

श्रमणी आर्यिका विसुव्रताश्री माता जी

मांस मदिरा की दुकानें बंद

अयोध्या की ओर गमन हो रहा था। गांव में मात्र १०-१२ घर की समाज और उसमें भी एक गुरुभक्त सक्रिय होरक आगे आए- पप्पू भैया। जो दरियाबाद आने के पहले ही संघ व्यवस्था में हर तरह से जुट गये और प्रार्थनारत रहे कि हमारे गांव में संघ प्रवेश करे। एक ओर टिकेतनगर की विशाल समाज थी, एक आरे अकेले पप्पू भैया। सब अटकलें लगा रहे थे- बड़े नगर में गुरुवर को जाना चाहिए क्योंकि संघ भी बड़ा है लेकिन गुरुवर के कदम दरियाबाद की ओर मुड़ गये। खिल उठा पप्पू भैया का चेहरा। उन्होंने अपने छोटे से गांव में विशाल संघ की यथा व्यवस्था की और जहाँ नॉन वेज (अण्डा, मांस) की दुकानें पड़ती वहाँ डण्डा ठोकते हुए कहा- अहिंसा, व्यसन मुक्ति शाकाहार के प्रणेता गुरुवर कल यहाँ पधारेंगे। एक भी दुकान कल खुली न दिखे। धूमधाम से संघ की अगवानी हुई। जैन-जैनेतर सब प्रसन्न थे और दुकानें सारी बंद। पप्पू भैया इतने अधिक जुड़ गये कि सम्मेद शिखर जी के विहार तक में आगे साथ चले।

श्रमणी आर्यिका विजितश्री माता जी

कमण्डल का पानी बना संजीवनी

परम पूज्य गणाचार्य गुरुवर का फैजाबाद में प्रवेश होने वाला था उसके पूर्व ही रोड़ पर एक गाय तड़पती दिखी उसे देखते ही गुरुवर उसके करीब पहुँचे उसकी अवस्था बड़ी ही गम्भीर थी। उसकी अवस्था थोडे देर की मानवत् ही प्रतीत हो रही थी। गुरुवर के रुकने से सारा संघ तथा नगर प्रवेश कराने वाले भक्तों की बहुत बड़ी भीड़ भी वहाँ एकत्रित हो गई। पूज्य गुरुवर ने किसी श्रावक से गाय का मुख खुलवाकर उसमें कमण्डल का पानी डाला जिसके प्रभाव से वह आंखे खोल गुरुवर को देखने लगी। जैसे कि कुछ कहना चाहती हो। पूज्य आचार्यश्री ने उसे प्यासा जान और पानी पिला दिया तथा उसे रोड़ के किनारे कराकर गुरुवर कुछ ही आगे बढ़े कि मरण के सन्मुख दिखने वाली वह गाय उठकर खड़ी हो गई तथा धीरे-धीरे आगे बढ़ गई। यह था गुरुवर के कमण्डल के पानी का चमत्कार जो मरती हुई गाय के लिए संजीवनी का कार्य कर गया।

श्रमणी आर्यिका विमोचना श्री माता जी

चतुर्थ कालीन आनंदानुभूति

३०.६.१८ ग्रीष्मकाल की तपती धूप और पूज्य गुरुदेव का ससंघ अविरल विहार एक महासंत की महायात्रा का महान परिचायक है। उस दिन धूप में लगभग १३ किमी. का विहार कर आहार स्थली पहुँचे। परीक्षा पर परीक्षा, वहाँ आहार के लिए टेन्ट लगा था। सोचा २-३ कमरे तो मिलेंगे बैठने। पर कुछ नहीं मिला। उनमें चौके का सामान बन रहा था। एक रूम खाली मिला पर उसमें गुरुदेव रूके, महाराज रूकें या माताजी। पूज्य गुरुदेव की नजर सामने आम के बगीचे पर पड़ी। उसके मालिक से अनुमति लेकर पूज्य श्री वहाँ पहुँचे। चतुर्विध संघ साथ में विराजमान हुआ। अब तो वहाँ का दृश्य ही नयनाभिराम बन गया। वहाँ आने वाले भक्तगण कहने लगे, गुरुवर आज हम धन्य हो गये आज का दृश्य तो चतुर्थ काल जैसे लग रहा है। गुरुवर ने कहा दृश्य ही नहीं आज सभी साधु भी चतुर्थकालीन आनंदानुभूति का अनुभव कर रहे हैं। निश्चित ही उस दिन सभी साधकों में अपूर्व ही विशुद्धि थी।

श्रमणी आर्यिका विकुन्दनश्री माता जी

विहार में पड़ा अहिंसा का प्रभाव

परम पूज्य आचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज ससंघ का तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की ओर अनवरत ३७००किमी. का विहार चला। इस विहार में पूज्य आचार्य श्री ने अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान भी अनवरत चला जिसके माध्यम से आचार्य श्री ने ८०,००० लोगों को शाकाहारी तो बनाया ही साथ ही अनेकों नगर ग्राम ऐसे रहे जहाँ गुरुवर के जाने से अहिंसा का पालन किया गया अर्थात् मांस, मदिरा आदि की दुकाने पूर्ण बंद रही।

संघ के विहार प्रवेश पर किसी चैनल वाले ने आचार्य श्री से पूछा- विहार राज्य में इतनी गरीबी क्यों है? पूज्य गुरुवर ने कहा- यहाँ मांस, मदिरा का अधिक उपयोग होता है जिस दिन यहाँ होने वाली हिंसा कम हो जायेगी उस दिन से विहार राज्य भी समृद्धिशील पैसे वाला हो जायेगा। गुरुवर की इस बात का सभी पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

श्रमणी आर्यिका विगुंजनश्री माता जी

निडर साधक

दरियाबाद के पूर्व एक जंगल में संघ रुका जहाँ घने जंगल की ओर पूज्य गुरुदेव और मुनि विहितसागर जी ठहरे शेष मुनिसंघ रोड़ की तरफ था। विहार की थकान के कारण सभी को श्रमपरिहारी निद्रा आ गई, किन्तु पूज्य गुरुदेव अपने चिंतन में निमग्न थे। रात्रि के लगभग दो बजे वहाँ अचानक कुछ सियार आये जिन्हें दूर से ही गुरुवर ने देख लिया था। सियार भी गुरुवर के कुछ करीब आकर खड़े हो गुरुवर की मूरत को निहारते रहे अंत में चले गये पर पूज्य गुरुदेव उसी मुद्रा में निडर, वीर की तरह विराजमान रहे, बिल्कुल भी नहीं डरे। धन्य है ऐसे निडर महान तपस्वी साधक आज के युग में लोग छिपकली से डरने लगे हैं वहाँ ऐसे निडर साधक ज्वलंत उदाहरण है।

श्रमणी आर्यिका विजिगीसा श्रीमाता जी

कटक भी संकट नहीं लगे

दीक्षा लेने के कुछ दिनों बाद पता चला संघ का विहार सम्मेद शिखर जी की ओर होना है तथा चातुर्मास वहीं होगा। सुनकर खुशी तो हुई साथ ही अंदर से डर लगा इतनी बड़ी यात्रा कैसे होगी। दीक्षा के बाद का प्रथम विहार था इसलिए थकान भी बहुत जल्दी होती थी। विहार प्रारंभ हुआ रास्ते भी कंकरीले, पथरीले मिले। कई बार अंतराय भी हुए, केशलोंच का समय आने पर केशलोंच और उपवास में भी विहार किया किन्तु गुरुदेव के आशीर्वाद से सब कुछ सहज हो गया और संघ सम्मेद शिखर जी आ गया। आज दीक्षा के बाद इतना लम्बा विहार कर मन प्रसन्न है।

श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासाश्री माता जी

विशाल पद यात्रा में भिण्ड के बाद तापमान लगातार बढ़ा लगभग ४५ से ४८ तक पहुंचा भीषण गर्मी में कई महाराज माताजिओं लगातार आहार में अंतराय पर भी सभी ने उत्साह पूर्वक विहार किया। सभी के लिये पूज्य गुरुदेव से साहस और ऊर्जा मिली क्योंकि पैर में इतनी तकलीफ दर्द होने पर पूज्य अनवरत विहार कर रहे है तो फिर हम क्यों नहीं कर सकते। दृढ़ता के साथ तीर्थाचार का पालन कर हम सभी के लिये उदाहरण बने। पू. गुरुदेव को त्रिवार नमोस्तु।

क्षुल्लक विनियोग सागर

शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी यात्रा श्योपुर (म.प्र.) के बाद सवलगढ तक का विहार नहर के किनारे हुआ। पूरा क्षेत्र १२५ किमी. का सुनसान क्षेत्र कोई बड़ा गांव नहीं छोटी-छोटी झोपडिया का गाँव था। २६.३.१८ को किशोरगढ का पुरा में छोटे छोटे २ कमरे का एक मकान में पू. गुरुदेव व अन्य महाराज रूके। पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ ग्रामीण आने लगे छोटे बच्चे महिलाए भी दर्शनार्थ आये। संघ पति श्री अशोक जी को पूज्य गुरुदेव ने कुछ बांटने का कहा था। ग्रामीण जनों पर गुरुदेव का वात्सल्य देख श्री अशोक जी ने सभी नास्ते के हेतु तैयार बूंदी और सेव बांटना शुरु कर दिया। पू. गुरुदेव का

आशीर्वाद एवं ऐसा अनूठा वात्सल्य पा सभी ग्रामीण बहुत खुश हुए। ऐसी वात्सल्य की मूर्ति पूज्य गुरुदेव को बारम्बार नमोस्तु।

क्षुल्लक विश्वानुत्तर सागर

तीर्थंकरों की पगडण्डियाँ

विहार में जैसे-जैसे शिखर जी के करीब पहुंचता गया। वैसे-वैसे घने जंगल ऊँची-नीची घाटी के चढ़ाव-उतार तथा वृक्षों से घिरी पगडण्डी के ककरीले, पथरीले, रास्ते देख लगता था कि मोक्षभूमि की ओर जाने वाले तीर्थंकर भगवंतों के समवशरण के श्रमण का ही वह रास्ता हो, जिस पर चारों ओर विखरे हुए आत्म विशुद्धि के परमाणु सभी के मन में और भी अधिक वैराग्य की मिठास घोल रहे हैं। उसी पथ से वर्तमान के वर्धमान तीर्थंकर स्वरूप पूज्य गुरुदेव के विशाल समवशरण ८४ पिच्छियों का विहार हो रहा है।

क्षुल्लिका विजिताश्री माता जी

रमजान के महीने में

लखनऊ से बांराबंकी की और संघ का मंगल विहार चल ही रहा था कि रास्ते में रात्रि होने लगी। स्थान अभी ढ़ाई किमी. दूर था। अत: दृढ़ संयमी पूज्य गुरुवर ने रात्रि विश्राम हेतु एक खेत की ओर मुड़ना चाहा, सभी ने प्रार्थना की गुरुदेव थोड़ा ही चलना है पर गुरुदेव ने किसी की न सुनी, तब दरियाबाद वाले पप्पू भैया तुरंत सामने स्थित कोलस्टोर के मालिक से पूछने गये वे मुस्लिम थे। अत: पहले तो कुछ नहीं बोले किन्तु जैसे ही संघ और संघाधिपति पूज्य श्री की सौम्य मुख मुहा को निहारा वैसे ही उनके मन ने स्वत: ही हाँ कर दिया सभी को इस बात का आश्चर्य था किन्तु उन्होंने कहा- रमजान के दिनों में हमें सच्चे साधुओं के दर्शन मिले। इससे बड़ा और क्या सौभाग्य होगा। धन्य है पूज्य गुरुदेव जिसकी सौम्य मूरत सभी को अपना बना लेती है।

क्षुल्लिका विभाषाश्री माता जी

प्रकृति ने किया स्वागत

अनंतानंत सिद्ध परमात्माओं की तपोभूमि सम्मेद शिखर जी के मंगल विहार में प्रकृति की मनोहारी छटा से नजर हटती ही नहीं थी। कहीं ऊँचे-ऊँचे ताड़ वृक्ष तो कहीं हरे-भरे पौधें, रंग-विरंगे पुष्प तो ऐसे प्रतीत होते हैं मानों प्रकृति ने गुरुवर की भक्ति में मार्ग को सजाया हो, रोड़ के एक ओर से दूसरी ओर खड़े वृक्षों पर पहुँचने वाली लताओं से जगह-जगह तोरण द्वार बन रहे थे मानों गुरुवर के स्वागत में ही बनाये हो, इस प्रकार नन्दन वन की शोभा के समान मन प्रफुल्लित करने वाले दृश्य को देखते हुए तो कभी गुरुवर की मंद मुस्कान, अरहंत केवली के विहार सम प्रशस्त गनन को देखते हुए अनेकों कि.मी. का रास्ता कब तय हो गया पता ही नहीं चलता।

क्षुल्लिका विपद्मश्री माताजी

घण्टों का पाठ मिनिटों में

हमारे आचार्य भगवन् ज्ञानोपयोगी है वो स्वयं भी अहर्निश अध्ययन, चिंतन में निमग्न रहते हैं और हम शिष्यों को भी ज्ञानाराधना में तल्लीन रखते हैं। प्राय: अन्य संघों में स्थाई रुकने पर साधुओं की क्लास लगती हैं क्योंकि विहार में रूकावट अधिक रहती है। किन्तु पूज्य आचार्य श्री सम्मेद शिखर की लम्बी यात्रा में रूकना कहाँ फिर भी चलते विहार में एक-एक महाराज को आगे बुलाकर उन्हें क्लास पढ़ाते है और जहाँ कहीं भी थकान दूर करने बैठते हैं वहाँ हम माताजियों को भी उक्त विषय याद करा देते है। मुझे आश्चर्य तो तब हुआ जब आचार्यश्री ने घण्टों का पाठ मिनिटों में याद करा दिया। हाँ जिन तीन श्लोकों को याद करने में हमें १ घण्टा लगता वे तीन श्लोक गुरुवर ने मात्र ३ मिनिट में याद करा दिये। धन्य है ऐसे महाज्ञानी गुरुवर निश्चित उनका ज्ञान जल्दी ही केवलज्ञान बनेगा।

क्षुल्लिका विगम्या श्री माता जी

नयी पिच्छी प्राप्त हो

यूँ तो मैं सम्मेद शिखर जी कई बार आई हूँ किन्तु इस वर्ष परम पूज्य गणाचार्य भगवन् के चातुर्मास से यहाँ का आनंद ही चार गुना अधिक हो रहा है। शाश्वत सिद्धभूमि पर २७.७.१८ गुरु पूर्णिमा के पवित्र दिन मुझे जो खुशी मिली वह जीवन में आज तक कभी नहीं मिली थी। वह है मम् श्रद्धेय गणाचार्य भगवन् की पिच्छी। मुझे गुरुवर से ब्रह्मचर्य व्रत लिए एवं ड्रेस चेंज किए कई वर्ष हो चुके, मैं सोचती थी क्या गुरुवर की पिच्छी लेने का सौभाग्य मुझे मिल सकेगा। आज मैं अपनी खुशी को वचनों से व्यक्त नहीं कर सकती। अब तो गुरु चरणों में यही प्रार्थना करती हूँ की आपके हाथ से मुझे जल्दी ही नयी पिच्छी प्राप्त हो।

बा.ब्र. ज्योति दीदी, भिण्ड

प्रभाव पहले चातुर्मास का

सन् १९८३ में परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का मुनि अवस्था का प्रथम चातुर्मास हमारे भावनगर में हुआ था। उस समय वहाँ के अधिकतर लोग सोनगड़ी (गुरुओं को न मानने वाले) थे किन्तु आचार्य श्री की छोटी (मात्र २१ वर्ष) उम्र, उस पर भी कठिन चर्या, साधना देख सभी अत्यंत प्रभावित थे। मैंने भी उस समय प्रथम बार ही अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी एवं आगमानुकूल चयविंत साधु को देखा था। उनके प्रवचन तथा क्लास पढ़ाने की शैली से भी मैं अत्यंत प्रभावित थी फलत: उसी वर्ष उत्तम ब्रह्मचर्य के दिन मैंने गुरुवर से जीवन पर्यन्त के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। लेकिन पुण्योदय सम्मेद शिखर जी की यात्रा में जाग्रत हुआ। भगवान महावीर स्वामी के प्रथम देशना से प्रसिद्धि को प्राप्त विपुलाचल पर्वत पर ड्रेस चेन्ज कर गुरु संघ में प्रवेश लिया। अब भावना भाती हूँ की सम्मेद शिखर जी सिद्धक्षेत्र में ही गुरुदेव के कर कमलों से मुझे आर्यिका दीक्षा प्राप्त हो।

बा.ब्र. दक्षा दीदी

जाग्रत हुई साधना की ललक

मैंने दिल्ली में अनेकों संघों के दर्शन किये किन्तु जब परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज के संघ के दर्शन किये और चलते विहार में भी उनके संघ की चर्या देखी तो ऐसा लगा मानों साधना की साक्षात् प्रतिमायें ही हों। गुरु संघ की इसी साधना ने मेरे मन में संयम की ललक जाग्रत कर दी और मैंने भी संयम पथ पर बढ़ने हेतु सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर लिए।

आचार्य श्री के वात्सल्य का तो कहना ही क्या है। वे हंसकर जब पूछते हैं प्रेक्षा जी ठीक हो तो मेरा खराब स्वास्थ्य भी ठीक हो जाता है। धन्य हूँ मैं कि मुझे चर्या साधना के सुमेरू पूज्य गणाचार्य भगवन् जैसे दादा गुरु मिले।

ब्र. प्रेक्षा जैन, दिल्ली

बारिश होने दीजिए

भगवान महावीर का प्रसिद्ध क्षेत्र राजगृही है। जहाँ की हमने वंदना करने का लाभ इस यात्रा में प्राप्त किया। पूज्य गुरुवर के पहुंचने से वहां के निवासी प्रसन्न थे। हुआ यूँ कि वंदना के दूसरे दिन की वंदना में जोर की बारिश होने लगी। एक माताजी के मुख से निकल गया कि बारिश रूके ताकि हम वंदना कर सकें। इतना सुनना ही था कि वहाँ के एक सज्जन बोले यहाँ वैसे ही तो बारिश कम होती है। गुरु के प्रभाव से हो रही है तो धरती व कृषक खुश हैं। होने दीजिए। तब लगा यह बारिश नहीं गुरु कृपा की बारिश हुई। ८ साल बाद जोर की बरसात थी।

ब्र. विमला जैन दीदी

विस्मृत ने हो जायें

अभी तक तो आप सभी ने नेता-अभिनेताओं के पीछे विडियों, कैमरों की भीड़ देखी होगी लेकिन मैंने नेता-अभिनेता नहीं उपसर्ग विजेता के पीछे कैमरों की भीड़ देखी है। सम्मेद शिखर जी कि ओर संघ का जब विहार चलता था तो जिन लोगों ने कभी निर्ग्रन्थ संतों को नहीं देखा ऐसे लोग भी अपनी दुकान, मकान, गाड़ी आदि में जहाँ भी होते थे वहीं

से अपने हाथ का काम छोड़ मोबाइल, कैमरों से संघ की फोटो, वीडियों को लेने लगते थे। जिसे देख ऐसा लगता था कि आँखों से देखा दृश्य कहीं विस्मृत न हो जाए इसलिए ही उसे मोबाइल कैमरें में सेव कर रहे हैं।

बा.ब्र. मीना दीदी

प्रभावना का अंग गुरुवर का संघ

श्री सम्मेद शिखर जी की इस विशाल तीर्थयात्रा में पूज्य गुरुदेव का विशाल संघ जब विहार करता था तो मार्ग के सभी लोग देखने के लिए दौड़ पड़ते थे। जनशून्य मार्ग में भी लोगों की भीड़ एकत्रित हो जाती थी। कई बार तो हैण्डपम्प से पानी भरने वाली महिलाएँ संघ को देखने में इतनी निमग्न हो जाती थी कि वर्तन भरकर पानी फैलने लगता था उसकी भी उन्हें खबर नहीं रहती थी। इतना सुहाना संघ के विहार का दृश्य लगता था। निश्चित ही अनुशासन ढंग से चलता हुआ गुरुवर का विशाल संघ जिनशासन की प्रभावना का एक प्रबल अंग बनता था।

बा.ब्र. रूबी जैन, शाहगढ़

दिव्य देशना

सम्मेद शिखर जी के इस विहार में छोटे-बड़े अनेकों पर्वत मिले जिन्हें देखते ही मन प्रसन्नता से भर जाता था। जब कभी विहार की थकावट को दूर करने पूज्य आचार्यश्री उन पर्वतों के अग्रभाग पर बैठकर जिनवाणी का रसपान कराते थे तो ऐसा प्रतीत होता था मानों भगवान महावीर स्वामी ही विपुलाचल पर्वत पर विराजमान हो, दिव्य देशना दे रहे हो।

बा.ब्र. आशा दीदी, भिण्ड

थकावट महसूस नहीं हुई

मुझे भी मालपुरा से तीर्थराज सम्मेद शिखर जी तक आचार्य श्री के साथ विहार करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस विहार का मेरे जीवन में सबसे बड़ा चमत्कार यह था कि १ किमी. भी कभी पैदल न चलने वाली मैं गुरुदेव के साथ प्राय: दोनों टाईम पैदल विहार कराया फिर भी कभी मेरे पैरों में न कोई तकलीफ और न कोई थकावट महसूस हुई इसे मैं गुरुवर का ही चमत्कार मानती हूँ। संघ में रहने के बाद अब मेरा मन घर जाने को ही नहीं करता। मैं गुरुवर से यहीं प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे भी संयम पथ पर चलने की शक्ति दो ताकि मैं भी हमेशा आपके चरणों में रह सकूँ।

मीनाक्षी जैन, मालपुरा

नींद नहीं आती थी

तीर्थयात्रा के संपूर्ण क्षण अपने आप में अविस्मरणीय एवं अकथनीय रहें। मेरे जीवनकाल का यह प्रथम अवसर था जबकि इतने महान आचार्य श्री एवं उनके विशाल संघ की तीर्थयात्रा कराने का बीड़ा उठाया। इस यात्रा में मेरे बहनोई एवं उनके पिता श्री भंवर लाल जी के सम्पूर्ण परिवार का पूरा सहयोग रहा। राकेश जी ने संघ की सभी व्यवस्थाएँ बहुत ही अच्छी तरह से मेन्टेन की।

सम्मेद शिखर जी की ओर जैसे ही संघ का विहार प्रारंभ हुआ तो मुझे तो नींद ही नहीं आती थी। बस एक ही चिंता होती थी कि संघ की व्यवस्था में कहीं कोई कमी न रह जाये। कहीं हमलोग से कोई गलती ना हो जाये। इतने दिनों की यह विशाल तीर्थयात्रा कैसे पूर्ण हो पाऐगी। विचार मेरे मन में घूमते रहते थे। और सारी रात्रि इन्हीं संकल्प-विकल्पों में निकल जाती थी। जब संघ के महाराज-माताजियों ने मेरी यह हालत देखी तो उन्होंने मुझे समझाया। लेकिन फिर भी मेरी चिंता दूर नहीं हुई। एक दिन पूज्य गणाचार्य गुरुदेव ने मुझे बुलाया और आशीर्वाद देते हुए कहा अशोक जी बिल्कुल मत घबराओं तीर्थयात्रा बहुत अच्छी तरह से सम्पन्न होगी। उस दिन से मुझे नींद आना शुरु हुई एवं मन में तीर्थयात्रा का आनंद आने लगा।

लगभग ५ माह की इस विशाल पद यात्रा में पूज्य गुरुदेव एवं उनके संपूर्ण संघ से हम लोग इतने घुलमिल गये कि संघ अपना परिवार लगने लगा। किसी कार्यवश घर भी जाना पड़ा तो वहाँ मन ही नहीं लगता था, अत: जल्दी से जल्दी

वापिस आ जाता था। संघ की आहारचर्या, विहार, वैय्यावृत्ति यही हमारे सम्पूर्ण दिन की दिनचर्या बन गई थी। इनमें से यदि एक भी कार्य छूट जाता था तो मन में बड़ी निराशता आ जाती थी। पूज्य गुरुदेव एवं उनके संघ का अपार वात्सल्य हम लोग को प्राप्त हुआ।

इस यात्रा की सानंद सफलता का कारण दोनों परिवार की तन, मन, धन से सेवा तो है ही, इससे भी प्रबल कारण गुरुदेव के संघ का अनुशासन रहा। सभी साधु अनुशासित थे, यही कारण था संघ की व्यवस्था बनाने में किसी को कोई परेशानी नहीं हुई अथवा जैसी भी व्यवस्था बनाई उसी में संघ ने एडजेस्ट किया। इन्हीं सब कारणों से यात्रा आनंददायी हुई। यात्रा के इस आनंद में ४-५ माह कब व्यतीत हो गये पता ही नहीं चला और जैसे ही यात्रा समापन की ओर बढ़ने लगी, मुझे पूर्व से भी अधिक चिंता होने लगी कि अब क्या होगा ? संघ के बिना घर में कैसे मन लगेगा ? कई बार सोचते-सोचते आंखों से आँसू भी बहने लगते थे और सचमुच ही यात्रा समापन के बाद बेटी की विदा जैसा महसूस होने लगा। अंत में मैं पूज्य गुरुदेव से यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे ऐसी शान्ति दो, आशीर्वाद दो कि पुन: पुन: आपके संघ की यात्रा कराता रहूँ और साधुओं का सान्निध्य पाता रहूँ।

आपका परम भक्त (संघपति) - अशोक जैन, सुराशाही

मैंने कुछ नहीं किया

मैंने अपने जीवन में प्रथम बार इतने बड़े संघ का विहार कराना तथा सेवा व्यवस्था बनाने का अवसर प्राप्त किया। सम्मेद शिखर जी के लम्बे विहार में ७ प्रांत मिले। हर जगह के अलग-अलग लोग मिले। अलग-अलग भाषा मिली। मुझे लगता था प्रांत बदलेगा तो क्या पता कैसे लोग मिलेंगे। हम इतने बड़े संघ की व्यवस्था बना पायेंगे या नहीं मन में डर लगता था लेकिन आचार्य श्री के आशीर्वाद से सारी व्यवस्थाएँ सहजता से बनती गई। संघ के साधुओं में भी वात्सल्य, अनुशासन के साथ आपस में निभने निभाने की जो कला है वह अपूर्व है।

इस विहार में मैंने कुछ भी नहीं किया जो कुछ व्यवस्था हुई वह एकमात्र गुरुदेव की कृपा से हुई यदि उनका आशीर्वाद न होता तो आज हम इतने बड़े विहार को नहीं करा सकते थे। परिवार वालों ने भी खूब साथ दिया मैं सभी का आभारी हूँ। गुरुदेव से प्रार्थना है ऐसा ही आशीर्वाद मेरे ऊपर बनाये रखना।

आपका भक्त- राकेश जैन, मालपुरा (दुबई)

सबसे बड़ी यादगार

मैं जब से धर्म से जुड़ी हुँ तब से अनेकों संघ के विहार कराये किन्तु सम्मेद शिखर जी जैसा विहार कभी नहीं देखा। पहली बात इस यात्रा में मैंने भिण्ड से सम्मेद शिखर जी तक अनवरत चौका लगाया जिसमें देखा कि संघ के माताजी महाराज कैसे छोटी सी जगह में एडजस्ट हो जाते हैं। दो साधुओं के जगह में चार साधुओं के आहार बड़े ही निराकुलता से सम्पन्न होते थे। दूसरी बात मेरे पतिदेव जो घर में हर ८-१५ दिन में डॉक्टर के पास जाते थे उनका स्वास्थ्य भी आचार्य श्री के आशीर्वाद से ठीक रहा। आचार्य श्री के साथ किया सम्मेद शिखर जी का यह विहार हमारे जीवन की सबसे बड़ी यादगार बन गया है।

श्रीमती अचला महिपाल जैन (आगरा)

यात्रा का अनुभव

जय हो गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज की जय। मैं बहुत ही शौभाग्यशाली हूँ कि मुझे इस ऐतिहासिक पद यात्रा जो कि मालपुरा से शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर जी तक थी। हमारा दिन सुबह पाँच बजे गुरुओं के साथ शुरु होता था उसके बाद हम विहार में आचार्य श्री के साथ चलते थे। इस दौरान हम जैन शिक्षा लेते थे। आचार्य श्री अपने श्री मुख से गाथा पाठ कराते थे जिसमें बढा आनंद आता साथ ही भक्ति भाव से अन्य बाते भी सिखाते। विहार के बाद पुरा संघ एक साथ बैठता और आसपास से आए लोगों को शिक्षा देते। कभी तो स्कूली बच्चों की संस्कार ज्ञान देकर उनका मार्गदर्शन

करते। इसके बाद आहार चर्या का वो भक्तजन लाभ लेते। क्योंकि यह राष्ट्रीय यात्रा थी इसलिए प्रशासन भी हमारे साथ था। कहीं जगहों पर सांसद एवं विधायक ने इस यात्रा से जुड़कर यात्रा की अनुमोदना की। यात्रा में कभी हम ए.सी. में सोते थे तो कभी मिट्टी में बिना गद्दे बिना पंखे। कभी बाथरूम मे नहाते कभी हेण्डपम्प पर। कभी विहार में आम के वृक्ष आते कभी केले के बगीचे। विहार में कभी कड़ी धूप होती है कभी अच्छी ठण्डी हवा वाली छांव। इस यात्रा से मैंने काफी कुछ सीखा। इतना पैदल में कभी अपनी जिंदगी में नहीं चला। इतनी जगह में अपनी जिंदगी में नहीं गया। इतनों नए लोगों से इतने कम समय में नहीं मिला। इतना सरल जीवन मैंने कभी नहीं जिया। हेडपम्प का पानी में आगे और वाटर कुलर फेल। इस यात्रा का हिस्सा बनकर मैंने अपना जीवन सफल बना लिया। मैं इतना वात्सल्य पाकर धन्य हूँ।

अनन्त जैन, (निवाई राजस्थान)

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की यात्रा के अविस्मरणीय पल

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की यात्रा के आनंद को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। जंगल में विश्राम तो कभी धर्मशाला में आहार, कभी पहाड़ों का विहार, कभी घाटियों का मुड़ाव सब कुछ अविस्मरणीय असीम आनंद दायी रहा।

श्रीमती विमला जैन, जयपुर

मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मुझे कभी इतने बड़े संघ के साथ सम्मेद शिखर जी तीर्थ की यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त होता। अभी तक तो ए.सी., कूलर में रहने तथा पलंग कुर्सी पर बैठने का अनुभव लिया था किन्तु विहार में जमीन पर बैठकर आहार देना, जंगल में सारी क्रियायें करने का बहुत अच्छा अनुभव मिला। अब तो मुझे ऐसा लगता है कि जब साधुओं के साथ चलने में इतना आनंद आता है तो एव बार साधुवन साधु जीवन का भी आनंद लेना चाहिए।

श्रीमती चन्द्रकान्ता जैन, सागानेर जयपुर

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की ओर संघ का विहार सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे लगा मेरे जीवन में ऐसा मौका न कभी आया और शायद न कभी आ पायेगा। अत: मैंने यात्रा का पूरा लाभ लिया। घर-परिवार छोड़कर साधु संघ में रहने का आनंद ही कुछ अलग होता है।

श्रीमती रानी जैन, टोंक

विहार तो मैंने बहुत देखे लेकिन यहाँ जैसा दृश्य अभी तक नहीं देखा था। यहाँ एक दो नहीं ८४ पिच्छी धारी साधुसंत है जब इनका विहार एक साथ अनुशासित तरीके से होता है तो नजर अन्यत्र नहीं जाती बहुत अच्छा लगता है।

श्रीमती कैलाशी देवी मालपुरा

मेरे हसबैण्ड को धर्म में इन्ट्रेष्ट नहीं था मुझे लग रहा था, उन्हें विहार में अच्छा लगेगा कि नहीं लेकिन जब वे यहाँ आये तो स्वत: ही आलू प्याज का त्याग कर दिया जिसे एक भी दिन वे नहीं छोड़ते थे। प्रतिदिन आहार और दोनों टाइम विहार कराते है हर काम में आगे रहते हैं। यह सब गुरुदेव के सान्निध्य और आशीर्वाद का प्रभाव है।

श्रीमती रूचि जैन, जयपुर

मेरी बहिन और माँ हर तीन दिन में फोन से बात करती थी लेकिन जब वे विहार कराने आई तो मैं उन्हें फोन पर गुस्सा करती थी कि मुझे भूल गये क्या, ८ दिन में तो फोन कर लिया करो। लेकिन जब मैं यहाँ आई तो पता ही नहीं चलता दिन कब निकल जाता है अब तो हसबैण्ड मुझसे पूछते है क्या तुम्हें मेरी याद नहीं आती। मैंने कहा- यहाँ आकर देखो आपको भी किसी की याद नहीं आयेगी।

श्रीमती त्रिशला जैन

सम्मेद शिखर यात्रा चलते-चलते

बड़ा परिवार

(१) राजगृही की वंदना के समय जब पूज्य गुरुवर को वहाँ के पूजारी ने देखा तो गुरुवर ने उससे पूछ लिया- ठीक हो? पुजारी को आश्चर्य हुआ बाबा मुझे जानते हैं। फिर पता चला २५ साल पहले यहाँ गुरुवर आए थे। उसने कहा- याद्दाश्त हो तो ऐसी। वह पुजारी इतने बड़े साधु-संघ को देखकर हर्षित हुआ और जब पीछे से हम पहुंचे तो ये बात बताई और कहा- देखो २५ साल में उनकी कितनी उन्नति हुई कितना परिवार बढ़ गया और मैं ज्यों के त्यों हूँ। हमने ऐसे ही कह दिया- अच्छा है, तुम्हारा परिवार बढ़ता तो तुम परेशन हो जाते। वह बोला- सच मे, यह क्षमता तो उन्हीं में है। हम क्या जाने सम्हालना।

अभिमान

(२) लम्बी तीर्थ यात्रा और गुरुवर द्वारा राष्ट्रव्यापी अभियान (अहिंसा व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं, जल ही जीवन है स्वच्छता) की चर्चा बहुत फैली हुई थी। विहार में साथ चल रहे पुलिस कर्मी भी इससे प्रभावित हो चर्चा करते जाते थे।

एक पुलिस कर्मी ने दूसरे से कहा- ये बाबा रहते कहाँ है?

दूसरा बोला- इनके प्रवचन में ही सुना है- नो ड्रेस नो एड्रेस। न तन पर कपड़े, न कोई पता- ठिकाना बस चलते जाते हैं।

पहला- लेकिन हैं तो इतने ज्ञानी ध्यानी। समाज में रहते हैं तो कुछ तो समाज का इससे भला करें।

दूसरा- अरे भाई! इतना चलते और अभियान चलाते हैं क्या हो ज्ञान ध्यान नहीं है?

पहला- सही कहाँ। अच्छा है ये दिगम्बर बाबा।

पैसे नहीं गुरु चाहिए

(३) एक कर्मचारी- मैंने दुनिया देखी, पर सच में ऐसा संत नहीं देखा जो अपनी जाति का ही नहीं जगत का भला करें। ऐसे महान अभियान को चलाये, बड़ा संघ चलाएँ ओर सबसे कहते चलें कि अहिंसा वालों, बेटी बचाओ आदि कोई तो कहते-कहते थक जाए पर ये धकते नहीं। धन्य हैं ये। मुझे पैसों की जरुरत न थी मेरा आर्किटेक्ट बनना फाइनल हो चुका है पर जब इनके बारे में सुना और पता चला- संघ में कुछ कर्मचारी की जरूरत है आपके संघपति से मिलकर मैंने कहा- सब करना स्वीकार है, चलो इसी बहाने जैनधर्म और जैनगुरु के पास चलूँगा और जितना बने अच्छी बातें लेकर जाऊँगा। यहाँ आकर पाया-रोज अच्छी बातें मिलती है, जो सही नहीं मिलती। संघ के साधु अच्छे है जो हमेशा गुरु के साथ चल रहे हैं।

पैदल ही त्याग का परिचय

अजैन राहगीर (विहार देखकर) साथ चल रहे व्यक्ति से- क्या ये बाबा पैदल ही चलतें है?

व्यक्ति- हाँ,

कहा से आये है?

व्यक्ति- दिल्ली (चौमासे) से।

कहाँ जाएँगे?

व्यक्ति- सम्मेद शिखर

राहगीर- पैदल ही चलेंगे।

व्यक्ति- पैदल ही चलते हैं बाबा।

राहगीर (आश्चर्य से)- पैदल ही, हमेशा।

व्यक्ति- हाँ।

उसने अति आश्चर्य में ३ बार यही प्रश्न दोहराया।

व्यक्ति- दूसरा प्रश्न नहीं पूछोगे ?

राहगीर- नहीं इतने से ही।

पहले पड़ा था, देखा आज है

एक स्थान पर स्कूल में आहार हुआ। स्कूल के टीचर्स ने पूज्य गुरुवर से प्रार्थना की हमारे बच्चों को कुछ उपदेश देने की कृपा कीजिए। चलकर आने की थकान को नहीं देखते हुए। पूज्य श्री ने ३०० बच्चों को सदुपदेश दिया। बच्चे पूरे समय मौन व व्यवस्थित बैठे रहे। अंत में उन्होंने पूज्य गुरुवर द्वारा शराब, मांस, अंडे आदि व्यसनों का उत्साहपूर्वक त्याग किया। टीचर्स भी प्रवचन से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने स्वयं स्कूल के बच्चों की सहायता से कमरे साफ कराये तथा संघ के साथ चलने वालों से कहा- आज पूरा स्कूल आपका है। जो जितने चाहे कमरे ले लीजिए।

उस दिन एक मुस्लिम टीचर ने हमसे कहा कि अभी तक इतिहास में जैन और जैन मुनियों के बारे में पढ़ा था पर आज साक्षात् देखा, बहुत आनंद आ रहा है। फिर हमने पूछा- क्या आज स्कूल की छुट्टी है ? वे बोलीं नहीं, आज तो पर्यवेक्षक यहाँ आने वाले थे पर आप आए तो बंद कर दिया। इससे बढ़कर क्या दिन हमारे जीवन में आएगा और पर्यवेक्षक को सूचना दे दी। वे इतनी प्रभावित थीं कि बोली- क्या आप लोग गुरुजी के साथ चलते हैं ? हमने कहाँ- हाँ, फिर कहा- तो ध्यान ज्ञान आदि वे सिखाते होंगे, क्या हम गुरुजी के साथ चल सकते हैं ? हमने कहा- हाँ, लेकिन इसी रूप में ज्ञान प्राप्त करना। वे बोली- फिर आत्मा का स्थान कैसे करेंगे ? हमने कहा- सब हो जाएगा। आश्चर्य था कि अजैन शिक्षिका तक के ऐसे भाव बन सकते हैं।

सब गुरुवर के दिव्य तेजमय दर्शन व प्रवचन का प्रभाव है जो सबको अपनी ओर बरबस खींच ही लेता है।

बिना वंदना के वंदना का फल

अचला जी (रास्ते में हर दिन चौका लेकर आगरा से साथ चलने वाले श्रावक श्री महीपाल जी की धर्मपत्नी)- हम शिखर जी हो आए।

पूछ- तो, सबसे पहले जाकर वंदना कर आए होंगे ?

अचला जी- हाँ माताजी, हम तो प्रतिदिन सम्मेद शिखर की ही क्या गिरनार जी आदि समस्त तीर्थों की १०८ वंदना करते हैं। अलग से तो चौके की जगह देखने गये थे।

पूछा- कैसे इतना फल मिलता है ?

अचला जी- गुरुवर क्या तीर्थ से कम हैं और उनके नाम के आगे १०८ लगता है, तो हो गया न उनके दर्शन से १०८ वंदना का फल।

संघपति नहीं नौकर हूँ

अशोक जी (संघपति) से किसी न कहा- आप इतने बड़े संघ के संघपति बने हैं धन्य है आपकी भक्ति।

अशोक जी- नहीं, संघपति बनने की योग्यता कहाँ है- आप यूँ समझें उनके नौकर हैं।

पूछा गया- आपकी पत्नी ?

बोले- वह चौके वाली है।

हमें इसी से जाना जाए, संघपति के नाम से नहीं, तो खुशी ज्यादा होगी।

(यह लघुता मैंने गुरुवर से सीखी, वे बड़े होकर खुद को बड़ा नहीं कहते)

पैदल जाऊँगा, डोली से नहीं

श्रद्धा-भक्ति और गुरु आशीर्वाद का संगम हो जाए तो असंभव कार्य भी संभव हो जाया करते हैं। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण साक्षात् हमने देखे, सुने व अनुभव किए हैं।

धन्य हैं ऐसे परम श्रद्धेय प.पू. श्रमण रत्नाकर, राष्ट्रसंत, गणाचार्य गुरुदेव जिनके आशीषों से भव्य श्रद्धालु जीवों के कार्य सहजता में हो रहे हैं और देखने वालों की श्रद्धा जैनशासन में वृद्धिंगत हो रही है।

सम्मेद शिखर पर्वत पर वंदना के समय एक ऐसे सज्जन मिले- जिन्होंने सुनाया-अभी हाल में मेरी वाईपास सर्जरी हुई है। डॉक्टर ने सीढ़ी चढ़ने तक को साफ मना किया था। ऐसे में यहाँ आना हुआ। पता चला गुरुवर पर्वत की वंदना कर रहे हैं। मुझसे न रहा गया। मैं तो उनके पास पहुंचा और अपनी बात सुनाई तथा अशीष की प्रार्थना की। उन्होंने कहां डोली कर लो। मैं बोला- पैदल जाऊँगा, डोली से नहीं। गुरुवर ने कहा- ठीक है माला जपते जाना। मैंने वैसा ही किया। आसानी से वंदना हो गयी। ऐसा है गुरुवर का चमत्कार।

अतिशय

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर पर एक दिन आदिनाथ भगवान की मंदरिया पर बिजली गिरी पर अतिशय रहा चरणों की कोई क्षति नहीं हुई। पूज्य गुरुदेव ने कहा- जो हो, माला अवश्य फेरें। सबने माला भी फेरी।

सम्मेद शिखर

ऊँचा है सम्मेद शिखर
जाते सब लाठी लेकर
होली वाले कहें चलोजी
बुला रहे पारस प्रभुवर

हरियाली शीतलता है
शाश्वत यहाँ पवित्रता है
३२ करोड़ उपवास का फल
एक वंदन से मिलता है

एक बार जो आता है
मधुवन पुनः बुलाता है
कठिन कार्य सरल बने
अतिशय सदा दिखाता है

गुरु विराग का चौमासा
जयकारा गूँजे हर ओर
यही प्रार्थना बीसों प्रभु से
बने रहें हम भक्ति विभोर।।

शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी की स्वर्णिम एवं ऐतिहासिक भव्य तीर्थ यात्रा
न भूतो न भविष्यति
गुरुदेव के आशीर्वाद से ही सब निंविघ्न सम्पन्न हुआ है

भंवरलाल जैन संघपति

यात्रा की भावना- गुलाबी नगर जयपुर के वे अत्यंत सौभाग्य के दिन थे, जबकि भगवान महावीर के प्रतिरूप, श्रमणाचार्यों के सिरमोर धरती के देवता, बुन्देलखण्ड के आदर्श रत्न, महासंघाधिपति मनमोहक छवि, प्रशस्त मुद्रा के धनी परम श्रद्धेय, समाराध्य, परमपूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य गुरुदेव श्री १०८ विरागसागर जी महाराज की स्वर्णिम जयन्ती के उपलक्ष्य में युग प्रतिक्रमण एवं यति सम्मेलन महामहोत्सव का अयोजन जयपुर में मई २०१२ में भवानी निकेतन में किया गया। १५०-२०० साधुओं का महाकुम्भ होने पर भी संघ की व्यवस्थित चर्या, अनुशासन एवं वात्सल्य ने सभी के हृदय को परिवर्तित कर दिया। युग प्रतिक्रमण का नयनाभिराम दृश्य तो आंखों में सदा के लिए बसा है।

यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण के बाद ही भट्टारक जी की नसियां, जयपुर में ही आचार्य श्री ससंघ ७४ पिच्छी का चातुर्मास सम्पन्न हुआ जिसमें हमारे परिवार को पूरे चातुर्मास में चौका लगाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस चातुर्मास के अवसर पर ही राकेश कुमार जैन, अशोक कुमार जी सुराशाही, गम्भीरमल जी चाकसू वाले एवं विमल कुमार जी लावा वालों में परस्पर आचार्य श्री के संघ को श्री सम्मेद शिखर जी की पदवंदना कराने एवं विधान के बारेमें चर्चा होती रही। अन्त में दोनों परिवार में यह तय हुआ कि परम पूज्य गणाचार्य १०८ श्री विरागसागर जी की ससंघ शाश्वती तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी की तीर्थवन्दना करानी है।

यात्रा की प्रार्थना- यात्रा की प्रबल भावना से हम दोनों परिवार के सदस्य सर्वप्रथमक अतिशय क्षेत्र कारीटोरन पंचकल्याण के अवसर पर पहुंचे। वहाँ १ फरवरी २०१४ को पूज्य जी की यात्रा कराने की सहर्ष प्रार्थना थी। यात्रा का निर्विघ्न पूर्णत: तक मीठा, घी, चावल आदि का त्याग किया। हम लोग प्रतिवर्ष संघ में चोका लेकर आते रहे और गुरुदेव से यात्रा प्रारंभ की स्वीकृति मांगते रहे।

यात्रा की स्वीकृति- पुण्योदय का महान दिन १९.११.१७ को मेरे ज्येष्ठ पुत्र राकेश कुमार जैन के जन्म दिन पर हमारा परिवार और अशोक कुमार जी सुराशाही का परिवार एलपीएस फैक्ट्री रोहतक रोड, हरियाणा पहुंचे। वहाँ से आचार्य श्री के साथ विहार कर कालीदास बाबा के आश्रम में संघ को आहार दिया तदुपरान्त श्रीफल भेटकर यात्रा की प्रार्थना की। अशोक जी के पुत्र संदीप एवं अंकित और मेरे पुत्र राकेश, पवन एवं मनीष ने इस बार विशेष प्रार्थना के साथ यात्रा की स्वीकृति मांगी तब पूज्य आचार्य भगवन ने पूर्व से चलने वाले सभी के नियम, त्याग और विशेष आग्रह को देखते हुए हम सभी को यात्रा शुभारम्भ की स्वीकृति प्रदान की। हमारे साथ गम्भीरमल जी चाकूस वाले एवं विमल कुमार जी लावा वाले भी साथ रहे।

यात्रा व्यवस्थाओं का प्रारूप- मालपुरा से सम्मेद शिखर जी तक की यात्रा में साधु संतों एवं श्रावकों के लिए निम्नांकित व्यवस्थाएँ की गई-

वाहनों की उपलब्धता- यात्रा संघ में कुल १६ वाहन साथ चल रहे थे जिसमें निम्नांकित महत्वपूर्ण थे-

१. मुनि संघ के चटाई, पाटे, बेग आदि सामान के लिए बड़ा ट्रक।
२. आर्यिका संघ के चटाई, पाटे, बेग आदि सामान के लिए बड़ा ट्रक।
३. चोका, सामग्री, आटा चक्की के लिए ट्रक।
४. वृद्ध क्षुल्लक जी, क्षुल्लिका जी एवं दीदीयों के बैठने के लिए २ छोटी गाड़ियां (फोरव्हीलर)।

५. विहार में साथ चल रहे ५०-५० श्रावक, श्राविकाओं के लिए बड़ी बस।

६. विहार में साथ चल रहे श्रावक-श्राविकाओं एवं कर्मचारियों के चाय, नाश्ता, भोजन की व्यवस्था के लिए हलवाई एवं पिकअप।

७. विहार में चलने वाले श्रावक-श्राविकाओं के लिए शुद्ध जल का टेंकर जो पानी पीने बरतन धोने, नहाने आदि में उपयोग होता था।

८. लाइट के लिए जनरेटर की व्यवस्था टेक्टर में रहती थी एवं अस्थाई लाइट फिटिंग के लिए इलेक्ट्रीशियन साथ में रहा।

९. विहार में चलने वाले श्रावक-श्राविकाओं के लिए दरी, गद्दे, चदर आदि बिस्तर एवं टेन्ट व्यवस्था के लिए ट्रेक्टर।

१०. यात्रा संघ में साथ चल रहे त्यागियों के लिए साहित्य, पठन सामग्री के लिए पिकअप।

११. संघ के आगे डी.जे. साउण्ड बाहन जिससे धार्मिक केसेट द्वारा यात्रा का माहौल भक्तिभाव से ओतप्रोत रहता था।

१२. एक टाटा मेजिक जिसमें विहार में कमण्डल जल रखने की व्यवस्था थी एवं विहार में चलने वाले भी थकने पर बैठ जाते थे।

यात्रा में मुख्य कार्यों की जिम्मेदारी-

१. यात्रा में संघ का रात्रि विश्राम व सुबह आहार के लिए समुचित स्थान निर्धारित करना-

१. प्यारेलाल जी मालपुरा　　२. बाबूलाल जी टोंक
३. राकेश कुमार जैन　　४. भागचंद जी चाकसू

२. आहार-व्यवस्था-

१. विमल कुमार जी लावा　　२. सुनीता (गुड्डी) सांवलिया, निवाई
३. शान्तिदेवी सुराशाही　　४. अनित जैन, ५. ललिता देवी मालपुरा

३. भोजन व्यवस्था, चाय नाश्ता-

१. गम्भीर मल जी चाकसू　　२. अशोक कुमार जी सुराशाही

४. पैदल विहार-

१. भंवरलाल जैन　　२. लालचन्द जैन　　३. मीनक्षा (रोना)
४. सुनीता जैन, निवाई,　　५. पदमचंद जी पंवालिया वाले,　　६. नरेश चन्द जी गोरमी,
७. बाबूलाल कुमावत आवां,　　८. सन्नी, हन्नी, मन्नी,　　९. सुभाष जैन देवली

५. यात्रा शुभारम्भ जुलूस व्यवस्था-

१. संदीप सुराशाही　　२. चम्पालाल सुराशाही,　　३. शांतिलाल जैन मालपुरा
४. दिनेश कुमार जैन,　　५. दीपक सुराशाही

५. मालपुरा समाज के सभी नवयुक मण्डल एवं महिला मण्डल

६. समस्त पिच्छीधारियों एवं श्रावकों को भगवान के दर्शन, अभिषेक एवं पूजा कराने की व्यवस्था-

१. लालचंद जैन मालपुरा　　२. बाबूलाल जी मारवाड़ा नैनवां
३. विनय कुमार जी गोरमी　　४. नरेश कुमार जी गोरमी
५. पदमचंद जी (पंचालिया) सांगानेर जयपुर

७. वाहनों पर नियंत्रण-

१. अशोक कुमार जी सुराशाही　　२. गम्भीरमल जी चाकसू

८. सम्मेद शिखर में भव्य प्रवेश-

१. राकेश कुमार जैन
२.संदीप कुमार सुराशाही
३. विनोद जी सुराशाही
४. पवन कुमार जैन
५. मिलाप चन्द्र जी सुराशाही
६. मनीष कुमार जैन, बैगलोर
७. अंकित सुराशाही

९. प्रचार-प्रसार वाट्सअप जिनवाणी चैनल-

१. मनीष कुमार जैन, बंगलौर
२. अनिल सुराशाही मालपुरा
३. लक्की पवई (सचिन)
४. सन्नी, हन्नी, मन्नी
५. आनन्द फोटोग्राफर
६. रूबी दीदी

यात्रा शुभारंभ- पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं मुहर्तानुसार मालपुरा राजस्थान से २७ फरवरी २०१८ को यात्रा का शुभारंभ होना निश्चित हुआ। साबर पंचकल्याण के बाद पूज्यवर ससंघ का मालपुरा आगमन हुआ। यहाँ २७ फरवरी को बड़े ही धूमधाम से सम्मेद शिखर यात्रा के शुभारंभ का उत्सव मनाया गया। जिसमें हाथी, घोड़े, ऊँट, बग्गियां, बैण्ड एवं महिला दिव्यघोष आदि लवाजमा के साथ मंगल कलश लेने वाली सौभाग्यवती महिलाएँ एवं असीम जन समूह आचार्य संघ के साथ व्यवस्थित तरीके से चल रहा था तथा यात्रा व्यवस्था की उपरोक्त सभी गाड़ियां भी सजावट के साथ विशाल जुलूस के पीछे चल रही थी। रास्ते में जगह जगह गुरुदेव की मंगल आरती, अर्ध्य एवं पाद पृच्छालन किया जा रहा था। शहर के मुख्य मार्ग में रेप (टेबिलों) पर १०८ थालियां सजाकर पूज्य गुरुदेव का पाद पृच्छालन हुआ। सम्पूर्ण जुलूस में ड्रान से पुष्पवृष्टि की गई। विशाल धर्म प्रभावना के साथ विशाल संघ की विशाल तीर्थयात्रा श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर नई मण्डी मालपुरा से श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर पाण्डुक शिला तक ४ घण्टे में पहुँचा। यहाँ यात्रा शुभारंभ की खुशी में झमूने वाले सम्पूर्ण राजस्थान से पधारे भक्तगणों ने विशेष उत्सव मनाया पश्चात् पूज्य आचार्य भगवन के प्रवचन एवं दोनों समाज का सामूहिक वात्सल्यभोज का आयोजन किया गया।

यात्रा विवरण- समुचित व्यवस्था के साथ यह विशाल पदयात्रा मालपुरा, टोडारायसिंह, दूनी, अलोद, बूंदी, कोटा, श्योपुर, जौरा, मुरैना, सिहोनिया, भिण्ड, बरासो, इटावा, कानपुर, लखनऊ, बाराबंकी, टिकैतनगर, दरियाबाद, फैजाबाद, अयोध्या, बनारस, धर्मपुरी, औरंगाबाद, रफीगंज, गया, राजगिरी, कुण्डलपुर, पावापुरी, गुणावा, कोडरमा, झुमरीतलैया होते हुए जन जन की आस्था का केन्द्र, बीस तीर्थकर भगवंतो की निर्वाण स्थली शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर जी पहुंची। इस यात्रा में कुल ४ महिने २१ दिन लगे एवं मालपुरा से सम्मेदशिखर जी तक २०२५ किलोमीटर की पदवंदना हुई।

यात्रा समापन- १८ जुलाई को पूज्य आचार्य संघ की तेरह पंथी कोठी, बीसपंथी कोठी, सिद्धायतन, मध्यलोक, त्रियोग आश्रम, गुणायतन आदि समस्त मधुवन मंदिरों के पदाधिकारी, कार्यकारणी सदस्यों के साथ सकल समाज ने भव्य अगवानी की। यात्रा संघ के करीब ५ हजार सदस्य नाचते-गाते, जयकार लगाते हुए जुलूस की शोभा को बढ़ा रहे थे। सम्मेदशिखर जी पहुंचकर सर्वप्रथम आचार्य संघ ने विमल समाधि में गुरुवंदना एवं भक्ति की। तीर्थयात्रा के समापन एवं मधुवन की उस आगवानी के दृश्य का जिनवाणी एवं पारस चैनल के माध्यम से १२० देशों ने साक्षात्कार कर अपने जीवन को धन्य किया।

पर्वत वंदना- २० जुलाई २०१८ का दिन हमारे जीवन में स्वर्णिम इतिहास बनकर आया जबकि चलते-फिरते भावी सिद्धों के साथ भूतकाल के अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठियों की वंदना करनेका अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य गुरुदेव ससंघ के साथ गाजे-बाजों से होने वाली इस वंदना में यात्रा संघ के लगभग १५० सदस्यों ने बंदनाएँ की। यात्रा संघ की ओर से

प्रत्येक टोंक पर अभिषेक, पूजन के साथ रजत लौंग, बंधनबार एवं ध्वजा चढ़ाई गई। आचार्य संघ ने ४ दिन पहाड पर रूककर ७-७ वंदनाएँ की जिसमें कभी सूर्य की सुनहरी किरणे तो कभी रिम झिम फुहार का अनोखा अनुभव प्राप्त हुआ। लास्ट के दो दिन सिर से पैर तक तर करने वाली मूसलाधार बारिस में भी आचार्य संघ ने वंदनाएँ की जो कि देखने वाले हर प्राणी को आश्चर्य उत्पन्न करती थी। स्वर्णभद्र टोंक पर जाकर यात्रा का संकल्प पूरा हुआ। आचार्यश्री ने वहाँ उद्बोधन किया। सभी को पुण्यकार्यों में संलग्न रहते हुए मोक्षमार्ग पर बढ़ने का आदेश दिया एवं सम्मेद शिखर की इस विशाल पदयात्रा को ऐतिहासिक, आनन्द तथा मंगलदायी बताया।

आचार्य श्री ससंघ २३ जुलाई को पाहड़ से मधुवन तलहटी में आये यहाँ तेरहपंथी कोठी में चातुर्मास कमेटी, समाज व यात्रा संघ द्वारा भव्य आगवानी की गई।

ऐसी यात्रा मैंने ही नहीं सम्पूर्ण यात्रा संघ के सदस्यों ने कभी नहीं देखी। इतना बड़ा संघ इतने सशक्त अनुशासन में रह सकता है यह मैंने पहली बार देखा। यात्रा में पूज्य गुरुदेव एवं उनके संघ का इतना वात्सल्य मिलता था कि एक बार आने वाले, बार-बार आते थे। एक सप्ताह रूकने वाले १ माह रूकते थे फिर भी किसी का जाने का मन नहीं होता था।

यह यात्रा यद्यपि हम दोनों परिवार के ओर से भी फिर भी इसमें परम गुरु भक्त आगरा निवासी श्री महिपाल जी एवं प्रदीप जी कानपुर वालों ने इटावा से सम्मेद शिखर जी तक अनवरत चौका लगाकर जो कार्य किया उसे हम कभी नहीं भूल सकते। निश्चित ही आप सभी धन्यवाद के पात्र है। यात्रा में मालपुरा, टोडारायसिंह, केकड़ी, निवाई, जयपुर, कोटा, श्योपुर, जोरा, मुरैना, भिण्ड, औरेया, बाराबंकी, धरियावद, टिकेतनगर, औरंगाबाद, झुमरतलैया, सरिया आदि जितने भी स्थानों से पारिवारिक एवं अन्य सदस्यों ने संघ के आहार-विहार में जो भी योगदान दिया है उनका मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हुआ धन्यवाद देता हूँ। इस यात्रा के सफलता का श्रेय राकेश कुमार जैन को दिया जाता है। उसी ने ही इस पूरी यात्रा की व्यवस्थाएँ को व्यस्थित किया है।

हमारे लिये निम्न महानुभावों का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा श्री महीपाल जी अचला जी एवं प्रदीप जी तिलारा वाले कानपुर जो इटावा से साथ चले जिनके ३० कर्मचारी ४ गाडियां प्रतिदिन आपके चौके में ३० से ४० पिच्छी के आहार होते रहे।

मण्डल विधान- प.पू. गणाचार्य १०८ श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में दिनांक ३० जुलाई को श्री सम्मेद शिखर विधान एवं श्री महावीर भगवान का विधान संगीतमय स्वरों व नृत्यों के बीच सम्पन्न हुआ इसमें ब्र.प्रदीप कुमार जैन का भी सहयोग रहा।

सम्मान व पद अलंकरण- २९ जुलाई को आयोजित आचार्य श्री के मंगल-कलश स्थापना दिवस पर तेरहपंथी कोठी की कार्यकारिणी द्वारा यात्रा संघ के दोनों परिवारों के सभी सदस्यों को सम्मानित किया गया एवं आदर्श संघपति से अलकृंत किया गया।

अंत में जिनके आशीर्वाद से यह संपूर्ण यात्रा निर्विघ्न एवं सानंद सम्पन्न हुई है ऐसे परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी गुरुदेव से एवं उनके पूरे संघ से यात्रा में होने वाली गलतियों, त्रुटियों की क्षमा मांगते हुए भविष्य में भी ऐसा अवसर प्रदान करनेकी प्रार्थना करता हूँ। आपका आशीर्वाद सदैव मुझ पर बना रहे ऐसी पवित्र भावना के साथ पूज्य गुरुदेव के चरणों में नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

आपका परम भक्त-
भंवरलाल जैन (मालपुरा वाले)
संघपति, यात्रा संघ, जयपुर

इतिहास रचा गया

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ द्वारा २०१७ के चातुर्मास के पश्चात् २३ अक्टूबर के कविनगर गाजियाबाद में ६० पिच्छीयों के साथ ऐतिहासिक चतुर्मास सम्पन्न कर निरंतर विहार कर उत्तर भागर के तीर्थों की वंदना कर शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की अहिंसा व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ, स्वच्छता अभियान के साथ विशाल पद यात्रा देश के सात प्रान्तों दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, विहार, झारखण्ड के ४३ जिलो के ८८१ ग्राम नगरों में अभियान के सूत्रों का संदेश देती हुई ३७३२ कि.मी. दूरी ३ डिग्री से ४८ डिग्री तापमान में यात्रा की जिसमें ३९ तीर्थों की वंदना सहित २६९ जिनमंदिरों के दर्शन, २९ स्थानों पर ४३ विभिन्न कार्यक्रम में जिनमें लाल किला दिल्ली पर एतिहासिक २७ जैनेश्वरी दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रमों सहित विशाल पद यात्रा में ७२ स्थानों १२८ धर्म सभाओं हुई जिनमें १०४७०० लोगों को अहिंसा ज्ञानी जानकर किसी जीव को न मारना अर्थात् संकल्पी हिंसा का त्याग, मांस अण्डे का सेवन नहीं करना, शराब का सेवन नहीं करना, भ्रूण हत्या न करना, न कराना, नकरने की सलाह देना न अनुमोदना अपने धर मुहल्ले गली व नगर को स्वच्छ रखना इन ५ सूत्रों का संकल्प कराया। १९ केन्द्रीय व राज्यों के मंत्रियों ११ संसद २९ विधायक, ४६ मेयर न.पा. अध्यक्ष व राजनेता ११ ग्राम पंचायतों के सरपचों तथा २४ प्रशासनिक अधिकारियों ने इस अभियान में अपनी सहभागिता दी। प.पू. गणाचार्य श्री संघ के आलाव ११२ दिगम्बर जैन साधु साध्वियों ११ श्वेताम्बर साधु साध्वियों ३० हिन्दु साधु १५ सिख संत ९ बौद्ध भिक्षु, १० क्रिस्चियन पादरी, २५ मुस्लिम मौलवी ने पू. गुरुदेव के दर्शन कर वात्सल्य मयी आशीर्वाद प्राप्त किया। इस विशाल तीर्थ पदयात्रा में प.पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री अपने विशाल चतुर्विध संघ के साथ जहां जहाँ गये वहाँ-वहाँ एक नया इतिहास रच गया। इस पंचम काल में चतुर्थ काल के जैसी चर्या एवं भगवान महावीर के समवशरण के समान चतुर्विध संघ के दर्शन से जैन जैनेत्तर दिगम्बर-श्वेताम्बर के भेद एवं आपसी मतभेद भूल पू. गणाचार्य श्री ससंघ की नगर-नगर गांव में भव्य अगवानी का इतिहास रचा। दिल्ली से हस्तिनापुर तीर्थ वंदना कराने का सौभाग्य श्री गजराज जी जैन (गंगवाल) अध्यक्ष त्रिलोक तीर्थ बडागांव ने प्राप्त किया तथा दिल्ली से कोटा तक की यह विशाल पद यात्रा सावर (जिला-अजमेर) एवं कोटा जैन समाज को कराने का सौभाग्य मिला।

दिनांक २७ फरवरी २०१८ को मालपुरा (राजस्थान) से श्री अशोक कुमार जी श्री भंवरलाल जी द्वारा बड़े गाजे बाजों के साथ महोत्सव पूर्वक प.पू. गुरुदेव श्री विरागसागर जी महामुनिराज को शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी तक की यह विशाल पदयात्रा निर्विघ्नसानन्द सम्पन्न होने के लिये श्री फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। पूरा परिवार मय रिस्तेदारों के साथ कर मंगल पदयात्रा की शुरूआत। लोडिग ट्रक, ट्रोली टेक्टर, बस पानी का टेन्कर, लाइट, टेन्ट, जनरेटर चौके आहर आदि पूर्ण व्यवस्था के साथ प्रारंभ हुई। यह मंगल पद यात्रा विहार कई ऐसे स्थान मिले जहाँ दूर-दूर समाज नहीं रात्रि में रूकने हेतु स्थान नहीं आहार के लिये भी पर्याप्त स्थान नहीं मिला फिर भी पूरा संघ जहाँ जैसा स्थान मिला वैसे ही स्थान में रूक कर अपनी सभी आवश्यक चर्या की। कई बार खेतों में रात्रि विश्राम किया। भीषण गम्मी की तेज लपटे पेड़ों के नीचे आनन्द पूर्वक सही। श्रावक गण जो साथ विहार में चल रहे थे जो कभी ए.सी. एवं पंखों में सोकर गर्मी से राहत लेते थे उन्हें भी पूरे संघ की चर्या देख पेड़ों की छाया में ही आनन्द की अनुभूति होने लगी। सभी संघ तो अपनी चर्या में रहता था पर श्रावकों का सुबह से शाम तक का समय कैसे निकल जाता मालूम भी नहीं पड़ता। शाम को प्रतिक्रमण आचार्य वंदना व आरती के बाद सभी श्रावक गुरु भक्ति में लीन होकर भजन नृत्य का आनन्द लेते थे। तीर्थों की वंदना में भगवान की भक्ति गुरुओं की भक्ति पू. गुरुदेव व संघ की देखते ही बनती थी। भक्ति कैसी होती तीर्थों की वंदना कैसी होती है पू.गुरुदेव पूरे संघ से सीखने को मिली घर में ४ लोग एक साथ नहीं रह सकते। यहाँ इतना बड़ा संघ पू. गुरुदेव के चरणों में हिल मिल कर अपनी साधना करता था। पू. गुरुदेव व संघ की समता सरलता सहजता वात्सल्य सभी को प्राप्त हुई।

विमल जैन

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ, स्वच्छता अभियान के साथ दिल्ली से सम्मेद शिखर जी तक की विशाल पदयात्रा में सहभागिता देने वाले केन्द्रीय व राज्यों के मंत्री

क्र.	दिनांक	स्थान	सहभागिता देने वाले केन्द्रीय व राज्यों के मंत्रीगण
१.	२.११.१७	लालकिला	श्री विजय कुमार जी गोयल केन्द्रीय मंत्री भारत शासन
२.	२.११.१७	लालकिला	श्री हर्षवर्धन जी केन्द्रीय मंत्री भारत शासन
	२.११.१७	लालकिला	श्री अरविन्द सिह जी, पूर्व मंत्री
३.	१२.११.१७	हिसार	श्रीमती सावित्री जी जिंदल पूर्व मंत्री
४.	१८.११.१७	हिसार	श्री हरिसिंह जी सैनी पूर्व मंत्री
५.	३१.१२.१७	बड़ौत	श्री मदन जी कौशिक मंत्री उत्तराखण्ड शासन
६.	१८.१.१८	गुरु ग्राम	श्री नरवीर सिंह जी मंत्री हरियाणा शासन
७.	४.२.१८	जयपुर	श्री कालीचरण जी सर्राफ मंत्री राजस्थान सरकार
८.	७.२.१८	चाक्सू	श्री वीकेश खोलिया (राज्य मंत्री दर्जा) राजस्थान सरकार
९.	२.३.१८	आवां	श्री प्रभुलाल जी सैनी कृषि मंत्री राजस्थान
१०.	५.३.१८	बूंदी	श्री शान्ति धारीवाल पूर्व मंत्री राजस्थान
११.	१७.३१८	केशवराव	श्री बाबूलाल जी वर्मा खादय मंत्री राजस्थान
१२.	२२.४.१८	वरासों (म.प्र.)	श्री नरेन्द्र सिंह तोमर केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार
१३.	२२.४.१८	वरासों	श्री लालसिंह जी आर्य राज्य मंत्री म.प्र. शासन
१४.	२३.४.१८	वरासों	श्री सुनील जी सिंध्वी सदस्य अल्प.आ. भारत शासन
१५.	२७.४.१८	वरासों	श्री नारायण सिंह जी कुशवाह मंत्री म.प्र. शासन
१६.	३१.५.१८	टिकैतनगर	श्री राजीव कुमार सिंह जी पूर्व मंत्री उ.प्र. शासन
१७.	४.६.१८	अयोध्या	श्री कलराज जी मिश्री मंत्री उ.प्र. शासन
१८.	१७.६.१८	वाराणसी	श्री नीलकण्ठ जी तिवारी, विधि कानून मंत्री उ.प्र.
१९.	१३.७.१८	झुमरीतिलैया	श्रीमती नीरा यादव शिक्षा मंत्री झारखण्ड

क्र.	दिनांक	स्थान	सहभागिता देने वाले सांसदगण
१.	२.११.१७	लालकिला	श्री मनोज जी तिवारी सांसद दिल्ली
२.	१०.११.१७	हिसार	श्री सुभाष चन्द्र जी सांसद एवं श्री दुष्यन्त जी चौटाला
३.	१७.१.१८	देहली	श्री रमेश जी विधुडी सांसद दिल्ली
४.	१८.२.१८	सावर	श्री डॉ. रघुशर्मा सांसद अजमेर
५.	१६.३.१८	कोटा	श्री ओम विडला, सांसद कोटी
६.	२३.४.१८	बरासो	श्री भागीरथ प्रसाद जी सांसद
७.	२६.४.१८	बरासो	श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी
८.	१९.५.१८	कानपुर	श्री प्रदीप जैन पम्मीभैय (राज्य सभा सदस्य)
९.	४.६.१८	फैजाबाद	श्री लल्लू सिंहजी सांसद
१०.	३१.३.१८	मुरैना	श्री अशोक जी अर्गल पूर्व सांसद मुरैना
११.	३०.६.१८	गया	श्री हरिमान जी मांझी सासंद गया

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ, स्वच्छता अभियान के साथ दिल्ली से सम्मेद शिखर जी तक की विशाल पदयात्रा में सहभागिता देने वाले विधायक गण

क्र.	दिनांक	स्थान	सहभागिता देने वाले विधायकगण
१.	२९.१०.१७	मयूर विहार	श्री श्रीदत्त जी शर्मा, विधायक
२.	१३.११.१७	हिसार	श्री अनूप जी, विधायक
३.	३१.१२.१८	बडौत	श्री के.पी. मलिक विधायक बडौत
४.	३.१.१८	सरधना	श्री संदीप जी सौम्य विधायक सरधना
५.	२६.१.१८	अलवर	श्री वनवारीलाल जी सिंहल विधायक, अलवर
६.	२९.१.१८	अलवर	श्रीमती शकुन्तला जी रावत विधायक, वानसूर
७.	२.२.१८	दौसी	श्री कन्हैयालाल जी शर्मा विधायक दौसा
८.	१०.२.१८	टोंक	श्री अमित सिंह जी मेहता विधायक, टोंक
९.	१.३.१८	टोडारायसिंह	श्री कन्हैयालाल जी चौधरी विधायक, टोडारायसिह
१०.	५.३.१८	बूंदी	श्री अशोक जी डोंगरा विधायक बूंदी
११.	५.३.१८	बूंदी	श्री संदीप जी शर्मा, विधायक कोटा
१२.	५.३.१८	बूंदी	श्री प्रहलाद जी गुंजल विधायक कोटा
१३.	२०.३.१८	इटावा	श्री विद्याशंकर जी नन्दवाना विधायक
१४.	२५.३.१८	श्यामपुर	श्री रामनिवास जी रावत, विधायक विजयपुर
१५.	२९.३.१८	जौरा	श्री सूबेदार सिंह जी विधायक, जौरा अलापुर
१६.	७.४.१८	भिण्ड	श्री नरेन्द्र सिंह जी कुशवाह, विधायक भिण्ड
१७.	२२.४.१८	वरासों	श्री मुकेश जी चौधरी, विधायक मेहगांव
१८.	२२.४.१८	वरासों	श्री राकेश जी शुक्ला पूर्व विधायक
१९.	८.५.१८	इटावा यूपी	श्रीमती सरिता भदौरिया विधायक इटावा सदर
२०.	९.५.१८	कर्वा खेडा	श्री शिवप्रसाद जी यादव पूर्व विधायक
२१.	१९.५.१८	कानपुर	श्री महेश जी त्रिवेदी विधायक कानपुर
२२.	१९.५.१८	कानपुर	श्री अरूण जी पाठक विधायक कानपुर
२३.	१९.५.१८	कानपुर	श्री पुष्पराज जी जैन एम.एल.सी. कन्नौज
२४.	२६.५.१८	लखनऊ	श्री नीरज जी वोस विधायक लखनऊ
२५.	२९.५.१८	वारावेकी	श्री सुरेश जी यादव विधायक, वारावेकी
२६.	२९.५.१८	वारावेकी	श्री शरद जी अवस्थी, विधायक
२७.	३०.५.१८	दरियाबाद	श्री सतीस जी शर्मा विधायक टिकैतनगर
२८.	४.६.१८	फैजाबाद	श्री वेदप्रकाश जी विधायक फैजाबाद
२९.	९.७.१८	पावापुरी	श्री रविज्योति जी विधायक पावापुरी

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ, स्वच्छता अभियान के साथ दिल्ली से शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी तक की विशाल पदयात्रा में सहभागिता देने वाले

क्र.	दिनांक	स्थान	सहभागिता देने वाले मेयर न.पा. अध्यक्ष, पार्षद एवं राजनेता
१.	२.११.१७	लालकिला	श्री श्याम जी जियाज भाजपा नेता
२.	२.११.१७	लालकिला	श्री संजय जी जैन पार्षद
३.	१२.११.१७	हिसार	श्रीमती शकुन्तला जी मेयर हिसार
४.	२५.११.१७	इंद्रिरापुरम	श्रीमती ममता जैन यू.एस.ए
५.	२५.११.१७	इंद्रिरापुरम	श्री अभिनव जी जैन, पार्षद इन्द्रिरापुरम
६.	३.१२.१७	मानसरोवर	श्री प्रवेश जी शर्मा पार्षद
७.	१७.१२.१७	करमपुरा	सुश्री सुनीता जी मिश्रा पार्षद करमपुरा
८.	१७.१२.१७	करमपुरा	श्री उमाशंकर जी मिश्रा उपाध्यक्ष भाजपा करोलवाग
९.	१७.१२.१७	करमपुरा	श्री सुरेन्द्र पाल (महाभारत के द्रोणाचार्य)
१०.	२९.१२.१७	बडौत	श्री संजय जी अध्यक्ष भाजपा वडौत
११.	२९.१२.१७	बडौत	श्री अमित जी राणा मेयर वडौत
१२.	११.१.१८	मेरठ	श्रीमती वीना वाधवा अध्यक्ष
१३.	१८.१.१८	गुरुग्राम	श्रीमती मधु आजाद मेयर गुरुग्राम
१४.	२६.१.१८	अलवर	श्री अशोक कुमार जी खन्ना सभापति न.पा.
१५.	३०.१.१८	राजगढ़	श्री कपिल शर्मा पार्षद अलवर
१६.	२.२.१८	दौसा	श्री पवन कुमार जी जैन पार्षद दौसा
१७.	४.२.१८	जयपुर	श्री संजय जी जैन अध्यक्ष भाजपा
१८.	१०.२.१८	टोंक	श्रीमती लक्ष्मी जैन मेयर टोंक
१९.	१३.२.१८	देवली	श्रीमती रेखा जैन अध्यक्ष न.पा. देवली
२०.	१३.२.१८	देवली	श्री भीमराज जैन पार्षद न.पा. देवली
२१.	१३.२.१८	देवली	श्री चांदमल जी जैन पार्षद न.पा. देवली
२२.	१८.२.१८	सावर	श्री अनिल मित्तल चेयरमेन न.पा. केकड़ी
२३.	१८.२.१८	सावर	श्री भूपेन्द्र सिंह जी शक्तावत पूर्व नरेश सावर
२४.	२४.२.१८	टोडारायसिह	श्री सन्त कुमार जैन अध्यक्ष न.पा. टोडारायासिह
२५.	२५.२.१८	मालपुरा	श्रीमती सपना जैन अध्यक्ष न.पा. मालपुरा
२६.	५.३.१८	बूंदी	श्री महावीर जी मोदी मेयर बूंदी
२७.	५.३.१८	बूंदी	श्री सत्येश जी शर्मा चेयरमेन बूंदी
२८.	५.३.१८	बूंदी	श्री टीकम जी जैन पार्षद बूंदी

२९.	१३.३.१८	कोटा	श्री राम कुमार जी मेहता चेयरमेन नगर विकास न्यास
३०.	१३.३.१८	कोटा	श्री महेश विजय महापौर कोटा
३१.	१७.३.१८	केशवरावपाटन	श्री सुखदेव सिंह सिन्धु अध्यक्ष न.पा. केशवरावपाटन
३२.	१७.३.१८	केशवरावपाटन	श्री हरमिदंर सिंह भाटिया पार्षद केशवरावपाटन
३३.	२०.३.१८	इटावा	श्री धर्मेन्द्र आर्य अध्यक्ष न.पा. इटावा
३४.	२१.३.१८	खातौली	श्री दौलत राम गुप्ता अध्यक्ष न.पा. श्योपुर
३५.	२७.३.१८	सवलगढ़	श्री दीपक जी चौधरी पूर्व अध्यक्ष न.पा. सवलगढ़
३६.	२९.३.१८	जौरा	श्रीमती ऊषा सिहल अध्यक्ष न.पा. जौरा
३७.	३०.३.१८	मुरैना	श्री रघुराज सिंह कसाना पूर्व अध्यक्ष न.पा. मुरैना
३८.	३१.३.१८	मुरैना	अशोक जी अर्गल महापौर मुरैना
३९.	२.२.१८	श्योपुर	श्री डॉ. गोपाल आचार्य पूर्व अध्यक्ष न.पा. बडौत
४०.	७.४.१८	भिण्ड	श्रीमती कलावती मुहैलिया अध्यक्ष न.पा. भिण्ड
४१.	१३.४.१८	भिण्ड	श्री डॉ. रमेश श्री दुबे अध्यक्ष जिला काग्रेस भिण्ड
४२.	२३.४.१८	वरासो	श्रीमती राजकुमारी जैन उपाध्यक्ष भाजपा भिण्ड
४३.	८.५.१८	इटावा	श्री शरद जी बाजपेयी सभासद इटावा
४४.	३१.५.१८	टिकेतनगर	श्री जगदीश प्रसाद जी गुप्ता मेयर टिकेतनगर
४५.	२७.६.१८	औरंगाबाद	श्री उदय कुमार गुप्ता चेयर मेन नगर परिषद विराटनगर
४६.	१३.७.१८	झुमरीतलैया	श्री प्रकाश राम जी अध्यक्ष न.पा. झुमरीतलैया

श्री सम्मेद शिखर जी तक की विशाल पदयात्रा में सहभागिता देने वाले सरपंचगण

क्र.	दिनांक	स्थान	सहभागिता देने वाले सरपंच गण
१.	१६.२.१८	सावर	श्री रंगलाल जी सरपंच सावर
२.	१.३.१८	टोडारायसिह	श्री भागीरथ सिंह सरपंच मुण्डिया कलां
३.	३.३.१८	अलोद	श्री किशन बैरागी सरपंच अलोद
४.	७.३.१८	कोटा	श्री राजकुमार जी सवडरा राज पंचायत परिषद
५.	७.३.१८	पानड़ी	श्री चम्पाराम जी धाकड़ सरपंच पानड़ी
६.	२१.३.१८	खतौली	श्रीमती सविता कुमारी जैन, सरपंच खतौली
७.	२१.३.१८	खतौली	श्रीमती सरोज मीणा प्रधान पंचायत समिति
८.	२६.३.१८	किशोरगढ का पुरा	श्री पातीराम रावत सरपंच कैमारा पंचायत
९.	२६.३.१८	किशोरगढ़	श्री जगदीश प्रसाद रावत पूर्व सरपंच टाटूपुरा
१०.	२९.३.१८	धौरा	श्रीमती वैजन्ती देवी सरपंच धौरा
११.	१.४.१८	सिहोनियां	श्री सौरभ तोमर सरपंच सिहोनियां

श्री सम्मेद शिखर जी तक की विशाल पदयात्रा में सहभागिता देनेवाले प्रशासनिक अधिकारीगण

क्र.	दिनांक	स्थान	सहभागिता देने वाले प्रशासनिक अधिकारीगण
	१२.१२.१७	तिहाड जैन	श्री हरीश त्यागी एस.पी., श्री राजकुमार जी आई.जी.
१.	२८.१.१८	अलवर	श्री सुकुमाल जैन मण्डल प्रमुख पी.एन.बी बैक
२.	५.२.१८	वीलवा	श्री अनिल जैन रिटायर्ड, डी.आई.जी
३.	६.२.१८	शिवदासपुरा	श्री राम अवतार चौधरी एस.आई.
४.	७.२.१८	चाकसू	डॉ. मीनू चौधरी, प्राचार्य मानव पी.जी. महाविद्यालय
५.	१०.२.१८	टोंक	श्री प्रदीप कुमार ए.एस.आई
६.	१०.२.१८	टोंक	श्री नरेन्द्र जैन, एस.ओ.
७.	११.२.१८	महेन्द्रवास	श्री एन.के. जैन, जस्टिक्स सिल्लिकम् मा.आ.
८.	१४.२.१८	जहाजपुर	श्री ओमप्रकाश जैन, तहसीलदार
९.	१५.२.१८	सागर	श्री मांगीलाल जी ए.एस.आई
१०.	२८.२.१८	टोरडी	श्री ओमप्रकाश जी, प्राचार्य शा.उ.मा.विद्यालय
११.	७.३.१८	कोटा	श्री जसपाल सिंह खरजा प्रन्सीपल एलनडस्ट्री
१२.	८.३.१८	कोटा	श्री एस.के. जैन, डिस्ट्रिकजज जयपुर
१३.	१९.३.१८	कानपुर	श्री रजतसिंह जैन, अपर जिलाजज प्रथम कानपुर
१४.	२२.३.१८	श्योपुर	श्री महेन्द्र शर्मा, एस.डी.ओ.पी. श्योपुर
१५.	२२.३.१८	श्योपुर	श्री पी.एल. सोलंकी, कलेक्टर श्योपुर
१६.	२२.३.१८	श्योपुर	श्री सुनील जी खेमरिया नगर नीरीक्षक श्योपुर
१७.	२७.३.१८	सवलगढ़	श्री गुरुवचन सिंह एस.डी.ओ.पी. सवलगढ़
१८.	७.४.१८	भिण्ड	श्री इलैया टी राजा, कलेक्टर भिण्ड
१९.	७.४.१८	भिण्ड	श्री प्रशांत जी खरे, एस.पी. भिण्ड
२०.	२५.५.१८	लखनऊ	श्री विनय कुमार जैन अपर महानिरीक्षक लखनऊ
२१.	२५.५.१८	लखनऊ	श्री सुरेश मिश्रा जेलर लखनऊ
२२.	२६.५.१८	लखनऊ	श्री राजेश कुमार जैन, डिप्टी कमिश्नर वाणिज्यकर
२३.	२९.५.१८	लखनऊ	आशू जैन आयकर महानिर्देशक
२४.	३१.५.१८	टिकेतनगर	श्री अजयकुमार द्विवेदी आई.ए.एस. उपजिलाधिकारी

श्री सम्मेद शिखर जी तक की विशाल पदयात्रा में साधुसंत दर्शनार्थ पधारें

क्र.	दिनांक	स्थान	साधु-साध्वियों के नाम
१.	२९.१०.१७	मयूर विहार	क्षुल्लिका भक्ति भूषण क्ष. पूजा भूषण माताजी
२.	३१.१०.१७	बालाश्रम	श्रमणाचार्य श्री विशद सागर जी मुनिराज ससंघ ५ पिच्छी
३.	२.११.१७	लालकिला	क्षुल्लक श्री विदेहसागर जी, क्षुल्लक श्री विश्वयोग सागर जी, क्षुल्लक विसौम्य सागर जी।

क्र.	दिनांक	स्थान	साधु-साध्वियों के नाम
४.	५.११.१७	सांपला	हिन्दुसेव श्री कृष्णानन्द परमहंस कालीदास धाम
५.	९.११.१७	हिसार	मुनिश्री विरंजन सागर जी, क्षुल्लक श्री विभौम्य सागर जी
६.	१९.११.१७	रोहतक	आचार्यश्री तन्मय सागर जी
७.	२२.११.१७	रोहतक	मुनिश्री विश्वपूज्य सागरजी ससंघ
८.	५.१२.१७	कुन्दकुन्द भारती	आ. विद्यानन्द जी, आचार्य श्री विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी
९.	१४.१२.१७	करमपुर	क्षुल्लक श्री योगभूषण जी, स्वामी आत्मानन्दी जी
१०.	१८.१२.१७	रोहिणी	ऐलाचार्य श्री अतिवीर सागर जी
११.	२४.१२.१७	खेकठा	क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी
१२.	२५.१२.१७	त्रिलोकतीर्थ बड़ागांव	ऐलाचार्य श्री त्रिलोक भूषण जी, मुनि श्री वारिषेण जी मुनि श्री तत्वभूषण जी, गणिनी आ. मुक्ति भूषण जी, माताजी आर्यिका अनुभूति भूषण माताजी आर्यिका चन्द्रमति माताजी, आर्यिका दृष्ट भूषण माताजी, आर्यिका भाग्यमति माताजी, क्षुल्लक रचितसागर जी
१३.	३१.१२.१७	वडौत	ऐलाचार्य प्रभावना भूषणजी
	३.१.१८	वडौत	आचार्य श्री भरतभूषण जी
१४.	७.१.१८	हस्तिनापुर	मुनि श्री भावभूषण जी, मुनिश्री निर्वाणभूषण जी, मुनि धर्मभूषण, क्षु. तारण सागर जी
१५.	१३.१.१८	मोदीनगर	मुनिश्री
१६.	१३.१.१८	ऋषभाचष्ठ	कौशल माँ
१७.	१७.१.१८	अहिंसा स्थल	आचार्य श्री श्रुतसागर जी, आचार्य विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी, मुनिश्री विरंजन सागरजी, मुनि अनुमान सागर जी, आ. लोकेश मुनि क्षु. विसौभ्य सागर जी
१८	१९.१.१८	सिद्धान्त तीर्थ	आर्यिका सुज्ञानी माताजी, ससंघ (२ पिच्छी)
१९.	२०.१.१८	अष्टापंद	श्वेताम्बर ३ साध्वियां
२०.	२२.३.१८	तिजारा	श्रमणाचार्य श्री विशद सागर जी ससंघ ६ पिच्छी श्रमण श्री सुभद्र सागर जी
२१.	३१.१.१८	सिकन्दरा	श्रमण श्री शुभम् कीर्ति जी
२२.	४.२.१८	मालवीय नगर जयपुर	श्रमण श्री विश्रांत सागर जी, ससंघ २ पिच्छी
२३.	१०.२.१८		आ. सुधर्म सागर जी महाराज
२४.	१०.२.१८	महेन्द्रवास	आचार्य सुकुमालिनन्दी जी ससंघ ४ पिच्छी आचार्य इन्द्र नन्दी जी ससंघ १० पिच्छी
२५.	११.२.१८	भरणी	क्षुल्लिका विश्वशान्ता श्री माताजी
२६.	१३.२.१८	देवली	श्रमण श्री मार्दव नन्दी जी महाराज
२७.	१४.२.१८	स्वास्तिधाम	आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ २ पिच्छी
२८.	१५.२.१८	सावर	गणिनी आर्यिका विज्ञाश्रीमाताजी ससंघ ९ पिच्छी
२९.	२२.२.१८	केकड़ी	क्षुल्लक नय सागर जी महाराज

३०.	२८.२.१८	टोरडी	क्षुल्लिका विप्रसन्न श्री माता जी
३१.	३.३.१८	बूंदी का गोठडा	आर्यिका विशेषमति माता जी,
३२.	७.३.१८	रिद्धीसिद्धि कोटा	आचार्य शशांक सागर जी ससंघ २ पिच्छी आर्यिका विगुन्जन श्री माताजी
३३.	८.३.१८	आरके पुरम कोटा	आर्यिका विधाताश्री माताजी, आर्यिका विकाम्या श्री माताजी, आर्यिका विप्राश्री माताजी, क्षुल्लिका विरजश्री माताजी
३४.	१६.३.१८	स्टेशन कोटा	क्षुल्लक संस्कार नन्दी जी
३५.	२२.३.१८	श्योपुर	श्रमण श्री सुभद्र सागर जी
३६.	३०.३.१८	मुरैना	श्रमण श्री विश्वविद सागर जी महाराज ससंघ १८ पिच्छी श्रमणी आ. विशाखाश्री माताजी
३७.	२.४.१८	सिंहोनिया	श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी, ससंघ १६ पिच्छी श्रमण श्री विश्वलोचन सागर जी
३८.	७.४.१८	भिण्ड	श्रमणश्री विश्रुतसागर जी ससंघ २ पिच्छी क्षुल्लिका विजिता श्री माता जी
३९.	१२.४.१८	भिण्ड	क्षुल्लक श्री विश्व बन्धु सागर जी
४०.	२२.४.१८	वरासो	श्रमण श्री विशोक सागर जी, ससंघ २ पिच्छी आर्यिका विरद श्री माता जी, क्षुल्लिका विप्रदा श्री माता जी
४१.	०.५.१८	भिण्ड	श्रमण श्री विश्वानन्द सागर जी
४२.	६.५.१८	महामृत्युजय तीर्थ	परम्पराचार्य श्री सौभाग्य सागर जी ससंघ
४३.	६.५.१८	इटावा	क्षुल्लिका मुक्ति प्रभा माता जी
४४.	२६.५.१८	डालीगंज	श्रमण श्री सुपार्श्व सागर जी
४५.	३१.५.१८	टिकैतनगर	गणिनी आर्यिका भरतेश्वरी माताजी ससंघ ५ पिच्छी
४६.	१७.६.१८	वाराणसी	श्रमणी आर्यिका विदुषी श्री माताजी ससंघ ५ पिच्छी
४७.	१८.६.१८	सारनाथ	वियेतनाम से आये बौद्ध संत
४८.	३०.६.१८	गया	ऐलाचार्य श्री विशुद्धसागर जी बौद्ध गया से बौद्ध भिक्षु
४९.	१३.७.१८	झुमरी तिलैया	आचार्य श्री शीतलसागर जी
५०.	१८.७.१८	सम्मेद शिखर जी	स्थविराचार्य श्री सम्भव सागर जी ससंघ आचार्यश्री निरंजन सागर जी आचार्य श्री तन्मय सागर जी गणिनी आर्यिका सुरत्नमति माताजी श्रमण श्री विश्वेशसागर जी श्रमण श्री विरंजन सागर जी ससंघ २ पिच्छी

नोटः- सिख संत, हिन्दुसंत, क्रिश्चियन पादरी एवं मुस्लिम मौलवी तथा बौद्ध भिक्षुओं ने भी प.पू. गणाचार्य श्री के दर्शन कर आशीर्वाद ग्रहण किया।

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में विशाल पद यात्रा के अन्तर्गत सम्पन्न कार्यक्रम

क्र.	दिनांक	स्थान	सम्पन्न कार्यक्रम
१.	२९.१०.१७	मयूर विहार दिल्ली	२५०० इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा त्रिदिवसीय भक्तामर विधान
२.	३१.१०.१७	बालाश्रम	दीक्षार्थियों की विनोवी एवं विधान आदि
३.	२.११.१७	लालकिला	२७ जैनेश्वरी दीक्षाएं, विद्वत सम्मान, डाक टिकट का विमोचन
४.	९.११.१७	हिसार	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, वेदी प्रतिष्ठा कलश रोहण
	१५.११.१७	हिसार	विराग वाटिका एवं विराग वाचनालय की स्थापना
५.	२३.११.१७	इन्द्रिरापुरम	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, शिखर कलशारोहण, महामस्तिकाभिषक
	२९.११.१७	गाजियाबाद	
६.	३.१२.१७	मानसरोवर पार्क	मंदिर का शिलान्यास
७.	६.१२.१७	द्वारका	विद्वत संगोष्ठी
८.	७.१२.१७	नजफगढ	महामस्तिकाभिषेक
९.	९.१२.१७	द्वारका	पू. गुरुदेव का मुनिदीक्षा दिवस एवं जैनेश्वरी दीक्षा महोत्सव
१०.	१४.१२.१७	करमपुरा	मुनि विहर्ष सागर जी एवं मुनि विहित सागर जी का मुनि दीक्षा दिवस
११.	१५/१६ दि.	करमपुरा	विद्वत संगोष्ठी
१२.	१७.१२.१७	करमपुरा	पू. गणाचार्य श्री के आचार्य पदारोहण महोत्सव वर्ष का समापन
१३.	२४.१२.१७	खेकडा	विराग शरणं तीर्थ का शिलान्यास
१४.	१.१.१८	वडौत	नववर्ष महोत्सव एवं अहिंसा विश्वमैत्री कीर्ति स्तम्भ का शिलान्यास
१५.	१४.१.१८	कविनगर	श्रमण विश्ववंद्यसागर जी की चरण समाधि की प्रतिष्ठा
१६.	१७.१.१८	अहिंसा स्थल	अहिंसा, व्यसन मुक्ति, शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान के साथ शाश्वत तीर्थश्री सम्मेद शिखर जी की विशाल पदयात्रा प्रारंभ
१७.	१५.२.१८ से २१.२.१८ तक	सावर (राज.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
१८.	२६.२.१८	मालपुरा	मुनिश्री विदाम्बर सागर जी का १२ वर्ष का मौन व्रत समाप्त एवं दीक्षा दिवस एवं गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी का दीक्षा दिवस
१९.	२७.२.१८	मालपुरा	संघपति श्री अशोक कुमार एवं भंवर लाल जी द्वारा शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी विशाल पद यात्रा के लिये निवेदन कर मंगल कलश की स्थापना कर मंगल पदयात्रा का शुभारम्भ किया गया।
२०.	४.३.१८	अलोद	विराग विश्रान्त सन्तशाला का लोकार्पण
२१.	६.३.१८	तालेडा	संत भवन का शिलान्यास
२२.	८.३.१८ से	आर.के.पुरम	२४ समवशरण विधान, धर्म की अभूत पूर्व प्रभावना
	१५.३.१८	कोटा	पू. गणाचार्य श्री को 'भारतीय संस्कृति के उन्नायक' की उपाधि से अलंकृत किया गया।
२३.	१७.३.१८	केशवराजपाल	संत भवन यात्री निवास, धर्मशाला का लोकार्पण

२४	२९.३.१८	जौरा अलापुर	भगवान महावीर जयन्ति
२५.	२.४.१८	सिहोंनिया	सर्वतोभद्र मंदिर हेतु ४ विशाल प्रतिमाओं की स्थापना एवं चौबीसी मंदिरों का शिलान्यास
२६.	६.४.१८	पावई (भिण्ड)	नवीन मंदिर के लिये भूमिपूजन
२७.	२२.४.१८ से २७.४.१८	वरासो (भिण्ड)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
२८.	२८.४.१८	मेहगांव	चमत्कारिक प्रतिमाओं की वेदी और त्रिमूर्ति चौबीस मंदिर का शिलान्यास
२९.	२९.४.१८ से ४.५.१८	भिण्ड	कीर्ति स्तम्भ स्थित सम्मेद शिखर रचना में लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, पचास मंदिर में शिखर कलशारोहण, २ मई को पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री का जन्म जयन्ती महोत्सव, अहिंसा पार्क में अहिंसा मैत्रीकीर्ति स्तम्भ शिलान्यास। महावीरगंज में अहिंसा मैत्रीकीर्ति स्तम्भ की स्थापना।
३०.	१७.६.१८	भेलुपुर वाराणसी	श्रुतपंचमी महोत्सव, पू. आचार्य श्री आदिसागर जी का आचार्य पदारोहण दिवस मनाया।
३१.	३०.६.१८ से २.७.१८	गया	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
३२.	१९.७.१८ से २३.७.१८	श्री सम्मेद शिखर पूर्वक ७ वंदना।	सिद्धक्षेत्र भगवान के चरणों की अभिषेक शान्ति धारा के साथ सिद्ध भक्ति

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमशः शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- **१. भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली
फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ द्वारा दिल्ली एनसीआर से शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी की विशाल पद यात्रा में तीर्थों एवं जिनमंदिरों के दर्शन, धर्मसभा में अभियान के पांच सूत्रों का संकल्प के स्थान व संख्या के प्रमुख नगर

क्र.	दिनांक	तीर्थों के नाम	प्रमुख शहर एवं धर्म सभास्थल	जिन मंदिर	धर्म सभा	५ सूत्रों का संकल्प	किलो मीटर	गाँव
१.	२९.१०.१७		मयूर विहार देहली	१	१	–	५८	१
२.	३१.१०.१७		बालाश्रम दरियागंज	१	२	–	१२	१
३.	२.११.१७		लालकिला दिल्ली	१	१	२००००	२	१
४.	६.११.१७		धंवड़ा मोड	१	–	–	३१	१
			रोहतक	२			५७	१
५.	८.११.१७	हंसी पुण्यदय		१			७५	१
६.	९.११.१७	तीर्थ	हिसार	२	११	१००००	२४	१
७.	२०.११.१७		वल्लभगढ़	१			१४८	१
८.	२२.११.१७		शास्त्री नगर	१			३२	१
९.	२२.११.१७		कबूलनगर	१			१३	१
१०.	२३.११.१७		इन्द्रिरापुरम	१	६	५०००	१८	१
११.	१.१२.१७		अहिंसाखण्ड इन्द्रपुर	१	–	–	३	१
१२.	२.१२.१७		विवेक विहार	१	–	–	१२	१
१३.	३.१२.१७		मानसरोवर पार्क	१	१	५००	१०	१
१४.	४.१२.१७		ग्रीनपार्क	१	–	–	२५	१
१५.	५.१२.१७		कुन्दकुन्द भारती	१	१	५००	७	१
१६.	५.१२.१७		आर के पुरम	१	–	–	३	१
१७.	६.१२.१७		एअर पोर्ट मंदिर	१	–	–	१०	१
१८.	६.१२.१७		द्वारका	१	२	५००	८	१
१९.	७.१२.१७		नजफगढ़	१	१	१०००	१८	१
२०.	९.१२.१७		पालम कॉलोनी	१	–	–	२४	१
२१.	११.१२.१७		जनकपुरी	१	१	५००	१२	१
२२.	१४.१२.१७		करमपुरा तिहाड़	१	१	१०००	२३	१
२३.	१८.१२.१७		रोहणी	८	३	–	१३	१
२४.	२२.१२.१७		रायपुर रोड़	१	–	–	१८	१
२५.	२३.१२.१७		बलराम नगर	१	–	–	१८	१
२६.	२४.१२.१७		खेकड़ा	२	१	५००	१८	१
२७.	२५.१२.१७	बड़ा गाँव		६	–	–	९	१
२८.	२८.१२.१७	त्रिलोक तीर्थ	बागपत	१	–	–	२१	१
२९.	२८.१२.१७		सखरपुर	१	–	–	१०	१

क्र.	दिनांक	तीर्थों के नाम	प्रमुख शहर एवं धर्म सभास्थल	जिन मंदिर	धर्म सभा	५ सूत्रों का संकल्प	किलो मीटर	गाँव
३०.	२९.१२.१७		बडौत	२	४	३०००	१०	१
३१.	१.१.१८		विनोली	१	१	५००	१४	१
३२.	२.१.१८	बरनावा		२	१	३००	५	१
३३.	३.१.१८		सरधना	१	१	१०००	२२	१
३४.	६.१.१८		मवाना	१	–	–	४५	१
३५.	६.१.१८	पार्श्वनाथ तीर्थ	–	१	–	–	८	१
३६.	७.१.१८	हस्तिनापुर	–	१३	१	३००	५	१
३७.	११.१.१८		मेरठ	१	१	२०००	४५	१
३८.	१२.१.१८	ज्ञान स्थली	–	२	–	–	१४	१
३९.	१३.१.१८		मोदीनगर	१	–	–	१२	१
४०.	१३.१.१८	ऋषभाचल	–	१	–	–	१६	१
४१.	१४.१.१८		कविनगर	१	–	–	८	१
४२.	१६.१.१८		नोएडा से ५०	१	१	३००	१८	१
४३.	१६.१.१८		तुगलकाबाद	१	–	–	१५	१
४४.	१७.१.१८	अहिंसा स्थल	–	२	१	१०००	८	१
४५.	१७.१.१८	–	गुडगांव से ४३	१	–	–	१४	८
४६.	१८.१.१८	–	गुडगांव	२	१	५००	१०	३
४७.	१९.१.१८	सिद्धान्त तीर्थ	–	९	१	३००	१३	४
४८.	१९.१.१८		कासन	२	–	–	१०	२
४९.	२०.१.१८	अष्टापद	–	३	–	–	१४	३
५०.	२०.१.१८	–	घारूखेड़ा	२	–	–	८	२
५१.	२१.१.१८	पद्मावती धाम	–	१	–	–	३३	१०
५२.	२२.१.१८	तिजारा	–	२	–	३००	४	१
५३.	२५.१.१८		किशनगढ़ वास	१	–	–	१८	३
५४.	२६.१.१८	–	अलवर	७	१	५००	२९	७
५५.	२७.१.१८	–	नसिया अलवर	२	१	५००	५	३
५६.	३०.१.१८	–	नसिया राजगढ़	१	–	–	४२	२२
५७.	३०.१.१८		बसवा	३	–	–	१२	४
५८.	३१.१.१८		बांदी कुई	१	–	–	१३	६
५९.	३१.१.१८		सिकन्दरा	१	१	३००	१३	५
६०.	२.२.१८		दौसा	१	१	५००	२५	४
६१.	४.२.१८	चूलगिरि	–	१	–	–	५६	१५
६२.	४.२.१८		खानियाजी	२	–	–	–	–
६३.	४.२.१८	–	मालवीय नगर जयपुर	१	१	१०००	१२	३

क्र.	दिनांक	तीर्थों के नाम	प्रमुख शहर एवं धर्म सभास्थल	जिन मंदिर	धर्म सभा	५ सूत्रों का संकल्प	किलो मीटर	गाँव
६४.	५.२.१८	–	सिद्धार्थ नगर	१	१	५००	४	२
६५.	५.२.१८	सांगानेर	–	१	–	–	९	१
६६.	६.२.१८	सुधर्म	–	१	–	–	१३	५
६७.	६.२.१८	पदमपुरा	–	२	–	–	१०	३
६८.	९.२.१८		चाक्सू	१	१	५००	१३	४
६९.	८.२.१८		निवाई	५	२	१०००	२७	२
७०.	१०.२.१८	–	टोंक	५	१	१०००	३२	२
७१.	१०.२.१८	महेन्द्रवास	–	१	२	१०००	१३	२
७२.	११.२.१८	–	भरणी	१	–	–	१३	३
७३.	१२.२.१८		सिंरोजी मोड़	–	१	३००	१३	३
७३.	१३.२.१८		देवली	४	१	१०००	२७	५
७४.	१४.२.१८	जहाजपुर	–	२	–	–	२०	६
७५.	१४.२.१८	स्वारित्त धाम	–	१	१	३००	३	१
७६.	१४.२.१८		विहड़ा	१	–	–	५	२
७७.	१५.२.१८	चन्द्रगिरि	सावर	५	७	६०००	१८	२
७८.	२१.२.१८		गुलगांव	१	–	–	५	२
७९.	२१.२.१८	गुणोदय तीर्थ	–	१	–	–	२	१
८०.	२२.२.१८		केकड़ी	४	१	१०००	२०	४
८१.	२३.२.१८		जूनियां	२	–	–	१३	३
८२.	२४..१८		उणियारा	१	१	५००	१०	१
८३.	२५.२.१८		मालपुरा	५	३	२५००	२५	४
८४.	२७.२.१८		अम्बापुरा	१	–	–	७	१
८५.	२८.२.१८		टोरडी	१	–	–	५	१
८६.	१.३.१८		टोडा रायसिंह	१	१	१५००	२४	५
८७.	२.३.१८		सिरीली	१	–	–	२०	३
८८.	२.३.१८		दूनी	१	१	५००	६	२
८९.	२.३.१८	आवां		१	–	–	१२	१
९०.	३.३.१८		बूंदी का गोठड़ा	१	१	५००	२०	३
९१.	४.३.१८		आलोद	१	१	५००	२१	७
९२.	५.३.१८		बूंदी	१	१	१५००	१७	८
९३.	६.३.१८		तालेडा	२	१	३००	१८	६
९४.	७.३.१८		रिद्धिसिद्धि कोटा	१	१	३०००	१९	९
९५.	७.३.१८		ऐलिक इस्टीटयूट	–	१	२०००	–	

क्र.	दिनांक	तीर्थों के नाम	प्रमुख शहर एवं धर्म सभास्थल	जिन मंदिर	धर्म सभा	५ सूत्रों का संकल्प	किलो मीटर	गाँव
९६.	८.३.१८	–	श्रीपुरा कोटा	३	–	–	८	१
९७.	८.३.१८	–	आर.के. पुरम कोटा	५	८	५०००	१३	१
९८.	१५.३.१८	–	महावीर नगर १	१	–	–	–	–
९९.	१५.३.१८	–	महावीर नगर २	१	–	–	–	–
१००.	१५.३.१८	–	विज्ञान नगर	१	१	५००	७	५
१०१.	१६.३.१८	–	स्टेशन कोटा	१	१	१०००	११	१
१०२.	१६.३.१८	केशवरावपाटन	–	१	–	–	१५	६
१०३.	१८.३.१८		कापरेन	१	१	१०००	२१	४
१०४.	१८.३.१८		रोटेदा	१	–	–	२	१
१०५.	२०.३.१८	–	इटावा	१	१	१०००	४०	१३
१०६.	२१.३.१८	–	खातौली	१	–	–	२२	५
१०७.	२२.३.१८	–	श्योपुर	२	१	१०००	२४	४
१०८.	२७.३.१८	–	जौरा अलापुर	२	१	१५००	१६२	३३
१०९.	३०.३.१८	–	मुरैना	३	–	–	३०	९
११०.	१.४.१८	सिहोनियां	–	१	–	–	३०	८
१११.	४.४.१८		पोरसा	१	–	–	२१	५
११२.	५.४.१८		गोरमी	१	–	–	१५	५
११३.	६.४.१८	पावई	–	१	–	–	२२	४
११४.	७.४.१८		भिण्ड	४	१०	३०००	२७	५
११५.	२२.४.१८	बरासो	–	२	–	–	२२	३
११६.	२८.४.१८		मेहगांव	१	१	५००	१९	४
११७.	२९.४.१८	–	भिण्ड	२	६	२०००	२२	५
११८.	५.५.१८	–	फूप	१	–	–	१२	५
११९.	५.५.१८	बारही	–	१	–	–	८	१
१२०.	६.५.१८	महामृत्यंज तीर्थ	–	३	–	–	२	१
१२१.	६.५.१८		उदी	१	–	–	१	–
१२२.	६.५.१८		नसियाजी इटावा	१	–	–	८	१
१२३.	७.५.१८		इटावा	२	१	१०००	४	१
१२४.	९.५.१८		इफदिल	१	–	–	९	२
			वावरपुर	१	–	–	३१	१२
१२५.	१८.५.१८		रतनलाल कानपुर	१	–	–	११६	३७
१२६.	१८.५.१८		कदिवई कानपुर	१	–	–	६	१
१२७.	१९.५.१८		आनन्द पुरी कानपुर	१	१	१०००	४	१

क्र.	दिनांक	तीर्थों के नाम	प्रमुख शहर एवं धर्म सभास्थल	जिन मंदिर	धर्म सभा	५ सूत्रों का संकल्प	किलो मीटर	गाँव
१२८.	२०.५.१८	–	जनरलगंज कानपुर	२	–	–	–	–
१२९.	२५.५.१८		आशियाना लखनऊ	१	१	८००	८१	२५
१३०.	२६.५.१८		चारवाग लखनऊ	१	–	–	–	–
१३१.	२६.५.१८		ऐशबाग लखनऊ	१	–	–	–	–
१३२.	२६.५.१८		डालीगंज लखनऊ	१	१	१०००	१८	५
१३३.	२६.५.१८		इन्दिरा नगर लखनऊ	१	–	–	८	२
१३४.	२८.५.१८		वाराबंकी	१	१	१०००	२५	८
१३५.	३०.५.१८		दरियाबाद	१	१	५००	४१	१४
१३६.	३१.५.१८		टिकैतनगर	२	१	१०००	६	३
१३७.	३.६.१८	रत्नपुर	–	–	–	–	५३	२८
१३८.	४.६.१८	अयोध्या	–	–	–	–	३०	१४
१३९.	१७.६.१८	भेलपुर बनारस	–	१	१	–	२२०	११५
१४०.	१७.६.१८	भदैनी बनारस	–	२	–	–	–	–
१४१.	१७.६.१८	–	अदाकिनी बनारस	१	–	–	५	२
१४२.	१८.६.१८	सारनाथ बनारस	–	२	–	–	१०	६
१४३.	१९.६.१८	चन्द्रावती	–	१	–	–	१८	७
१४४.	२७.६.१८		औरंगाबाद	१	–	–	१७७	७०
१४५.	२८.६.१८		रफीगंज	१	–	–	३३	११
१४६.	३०.६.१८		गया	२	२	१०००	४६	२३
१४७.	५.७.१८	राजगृही	–	–	–	–	६५	२१
१४८.	–	वंदना	–	–	–	–	२५	१२
१४९.	८.७.१८	कुण्डलपुर	–	७	–	–	१८	१२
१५०.	९.७.१८	पावापुर		३	–	–	१५	४
१५१.	१०.७.१८	गुणावा	–	२	–	–	२४	१०
१५२.	१०.७.१८	–	नवादा	१	–	–	२	१
१५३.	१३.७.१८	–	झुमरीतिलैया	२	१	१०००	७३	२२
१५४.	१४.७.१८	–	धाथडीह	–	१	८००	२०	११
१५५.	१५.७.१८	–	सरिया	१	–	–	३९	१६
१५६.	१६.७.१८	–	केलाटांड	–	१	५००	११	१
१५७.	१८.७.१८	श्री सम्मेद शिखर	–	३	–	–	३४	१०
१५८.	१९.७.१८	श्री सम्मेद शिखर	–	–	–	–	८१	–
१५९.	२३.७.१८	तक वंदना	–	–	–	–	–	–
		३९ तीर्थक्षेत्र		**२६९**	**१२८**	**१०४७८०**	**३७३२**	**८८१**

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ८७ पिच्छी

३९वाँ श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र पावन वर्षायोग २०१८

श्री दिगम्बर जैन तेरहपंथी कोठी मधुवन जिला- गिरीडीह (झारखण्ड)

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
१.	**प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज**	प.पू. आचार्य विमलसागर जी महाराज	सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी तीर्थ जैन तेरह पंथी कोठी मधुवन (झारखण्ड) स.सू.- धर्मचन्द्र सबलावत मो. ९७७४०१२९१८ बा.ब्र. मीना दीदी (संघस्थ) मो. ९८२६६५१५३४
२.	श्रमण श्री विहितसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३.	श्रमण श्री विश्वलोचनसागरजी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४.	श्रमण श्री विशोकसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५.	श्रमण श्री विश्वेशसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६.	श्रमण श्री विवर्धनसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७.	श्रमण श्री विश्वविद सागर मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८.	श्रमण श्री मनोज्ञसागर जी मुनिराज	श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी महाराज	
९.	श्रमण श्री विदाम्बर सागर जी मुनिराज	पू.गणा.श्री विरागसागर जी महामुनिराज	
१०.	श्रमण श्री विश्वलोकेशसागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
११.	श्रमण श्री विश्वमित्र सागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१२.	श्रमण श्री विधेयसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१३.	श्रमण श्री विश्वाक्षरसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१४.	श्रमण श्री विशौर्यसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१५.	श्रमण श्री विश्वानन्दसागर जी मुनिराज	श्रमणाचार्य विशद्सागर जी महाराज	
१६.	श्रमण श्री विश्वदृगसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१७.	श्रमण श्री विश्वनायकसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१८.	श्रमण श्री विश्वनायकसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१९.	श्रमण श्री विरंजनसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२०.	श्रमण श्री विनयन्धरसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२१.	श्रमण श्री विश्वदक्षसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२२.	श्रमण श्री विश्वभानुसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२३.	श्रमण श्री विश्वहितसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२४.	श्रमण श्री विश्वधीरसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२५.	श्रमण श्री विश्वभद्रसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२६.	श्रमण श्री विनिवेषसागर जी मुनिराज	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२७.	श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२८.	श्रमणी आर्यिका विदुषीश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२९.	श्रमणी आर्यिका विनीतश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३०.	श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	

मूल संघ

पू. गणाचार्य श्री	-	१
मुनिराज	-	२५
आर्यिका	-	३३
ऐलक	-	१
क्षुल्लक	-	११
क्षुल्लिका	-	१९
कुल योग	=	**९०**
ब्रह्मचारी भैया	-	७
ब्रह्मचारिणी बहिनें	-	११
		१०८

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
३१.	श्रमणी आर्यिका विविक्तश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३२.	श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३३.	श्रमणी आर्यिका विजेताश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३४.	श्रमणी आर्यिका विश्वासश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३५.	श्रमणी आर्यिका विशाखाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३६.	श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३७.	श्रमणी आर्यिका विरम्याश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३८.	श्रमणी आर्यिका विकाम्याश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३९.	श्रमणी आर्यिका विकंपाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४०.	श्रमणी आर्यिका विप्राश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४१.	श्रमणी आर्यिका विप्रभाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४२.	श्रमणी आर्यिका वियोजनाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४३.	श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४४.	श्रमणी आर्यिका विरक्षणाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४५.	श्रमणी आर्यिका विचक्षणाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४६.	श्रमणी आर्यिका विदितश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४७.	श्रमणी आर्यिका विदिताश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४८.	श्रमणी आर्यिका विरतश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४९.	श्रमणी आर्यिका विरदश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५०.	श्रमणी आर्यिका विभक्तश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५१.	श्रमणी आर्यिका विनोदश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५२.	श्रमणी आर्यिका विसुव्रताश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५३.	श्रमणी आर्यिका विजितश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५४.	श्रमणी आर्यिका विमोचनाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५५.	श्रमणी आर्यिका विकुन्दनश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५६.	श्रमणी आर्यिका विगुन्जनश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५७.	श्रमणी आर्यिका विजिगिसाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५८.	श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५९.	ऐलक विश्वविजय सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६०.	क्षुल्लक विश्वभूषण सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६१.	क्षुल्लक विश्वबन्धुसागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६२.	क्षुल्लक विदेह सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६३.	क्षुल्लक विसौम्य सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६४.	क्षुल्लक विश्वज्ञेय सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
६५.	क्षुल्लक विश्वाननसागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६६.	क्षुल्लक विश्वानुत्तरसागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६७.	क्षुल्लक विनियोग सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६८.	क्षुल्लक विश्वरक्ष सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६९.	क्षुल्लक विवक्षित सागर जी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७०.	क्षुल्लिका विजिताश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७१.	क्षुल्लिका विस्मिताश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७२.	क्षुल्लिका विभूषाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७३.	क्षुल्लिका विभाषाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७४.	क्षुल्लिका विभूषणाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७५.	क्षुल्लिका विप्रदाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७६.	क्षुल्लिका विसुदृढ़श्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७७.	क्षुल्लिका विश्रमाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७८.	क्षुल्लिका विनिग्रहश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७९.	क्षुल्लिका विश्वशान्ताश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८०.	क्षुल्लिका विरोचनाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८१.	क्षुल्लिका विरजश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८२.	क्षुल्लिका विरजाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८३.	क्षुल्लिका विपदमाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८४.	क्षुल्लिका विक्षमाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८५.	क्षुल्लिका विकण्ठश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८६.	क्षुल्लिका विगम्यश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८७.	क्षुल्लिका विशीलाश्री माताजी	पू.गणा. श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
अन्य दीक्षित-			
८८.	आर्यिका सुभद्रामती माता जी	पू. आचार्य सन्मतिसागर जी	
८९.	क्षुल्लक श्री श्रुतसागर जी	आचार्य सिद्धान्त सागर जी	
९०.	क्षुल्लिका धर्मश्री माता जी	श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी	

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

सितम्बर माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान	नाम
जन्म दिवस	१.९.१९४५	ललितपुर	श्रमण श्री विशोक सागर जी
जन्म दिवस	१.९.१९४४	भिण्ड	श्रमणी आ. विजेताश्री माता जी
जन्म दिवस	२.९१९७८	भिण्ड	गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी
जन्म दिवस	८.९.१९८६	नोहटा	क्षुल्लक श्री विसौम्य सागर जी
जन्म दिवस	४.९.१९५०	हमीरपुर टोंक	श्रमण श्री विश्वनाथ सागर जी
जन्म दिवस	७.९.१९८०	ललितपुर	श्रमणी आ. विसुव्रतश्री माता जी
पुण्य तिथि	१३.९.२०११	सागर	श्रमण श्री प्रत्यक्ष सागर जी
पुण्य तिथि	१५.९.२००८	मुंबई	श्रमण श्री विश्वप्रिय सागर जी
पुण्य तिथि	१६.९.२००२	श्रेयांस गिरि	श्रमणी आ. वियोगश्री माताजी
जन्म दिवस	१७.९.१९८३	गुरसराय	श्रमणी आ. विमुक्तश्री माताजी
पुण्य तिथि	१८.९.२००२	बीना (म.प्र.)	श्रमण श्री विश्व कीर्ति सागर जी
जन्म दिवस	२०.९.१९९१	भिण्ड	क्षुल्लिका विगम्य श्री माता जी
दीक्षा दिवस	२३.९.२००९	गांधी नगर	क्षुल्लक श्री विश्वाक्षर सागर जी, क्षुल्लक श्री विश्वदृग सागर जी, क्षुल्लक श्री विजयेशसागरजी
दीक्षा दिवस	३०.९.२०१७	भिण्ड	श्रमणी आ. सर्वश्री माता जी, श्रमणी आ. शुभश्री माताजी, श्रमणी आ. सिद्धिश्री माताजी, श्रमणी आ. संयम श्री माता जी, श्रमणी आ. साम्यश्री माताजी, श्रमणी आ. समयश्री माताजी, क्षुल्लिका शील श्री माताजी।

भाद्र मास के व्रत कल्याणक महोत्सव

२७ अगस्त २०१८	भाद्र कृष्ण १	सोलह कारण व्रत प्रारंभ
२ सितम्बर २०१८	भाद्र कृष्ण ७	श्री शांतिनाथ जी गर्भ कल्याणक
३ सितम्बर २०१८	भाद्र कृष्ण ८	अष्टमी व्रत, रोहिणी व्रत
८ सितम्बर २०१८	भाद्र कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत
१० सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल ३	रोहणी
१४ सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल ५	दशलक्षण व्रत प्रारंभ, पुष्पाजंलि व्रत प्रारंभ
१७ सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल ८	अष्टमी व्रत, श्री पुष्पदन्त जी मोक्ष कल्याणक
१८ सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल ९	पुष्पाजंलि व्रत पूर्ण
१९ सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल १०	धूप दशमी
२२ सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल १३	रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
२३ सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल १४	अन्नत चतुर्दशी, श्री वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक दशलक्षण व्रत पूर्ण
२४ सितम्बर २०१८	भाद्र शुक्ल १५	रत्नत्रय पूर्ण

संघ की चुटकियाँ

१. **एक मुनिराज (ईर्यापथ प्रतिक्रमण में)** – आ.श्री ! आज मध्यलोक में आहार करने गये थे। (मध्यलोक सम्मेद शिखर की तलहटी का एक प्रसिद्ध पार्श्वनाथ मंदिर)

आ.श्री (प्रमाद भाव में)– हम भी तो मध्यलोक में गये थे, ऊर्ध्व लोक में नहीं।

२. **एक साधक**– आ.श्री ! सोला का मतलब बताइए ?

आ.श्री – एक और छह। इतना ही नहीं पता ? (१६ प्रकार की शुद्धि)

३. **स्वाध्याय के बाद**– आ.श्री आनंद आया ?

संघ – हाँ, आया। (इतने में कैमरामेन आया, जिसका नाम आनंद था)

आनंद– मुझे याद किया आपने ?

आ.श्री– नहीं तुम तो बिना बुलायें आ गये।

४. **आर्यिका माताजी**– आ.श्री ! आज ७ हरी हो गई।

आ.श्री– १ ज्यादा हुई तो कल १ कम लेना।

क्षुल्लक जी– आ.श्री ! कभी एक कम हो जाए तो अगले दिन.....

आ.श्री– नहीं, ऐसा मत करना कि अगले दिन एक ज्यादा कर लो।

❖❖❖

विरागामृत

- ❖ जितनी जाप डॉ. की करते हो उतनी भगवान की कर लो तो रोग रहे ही क्यों ?
- ❖ जीवन में बदलाव आये तो स्वाध्याय सार्थक है।
- ❖ मन की तरंगे मंत्र का काम करती हैं।
- ❖ समूह में आनंद है, एकल विहार में कष्ट।
- ❖ झूठ + चोरी + मायाचारी = मजाक

❖❖❖

सब शाश्वत

शाश्वत क्षेत्र तीर्थराज सम्मेद शिखर की ९ कि.मी. की चढ़ाई (वंदना) पूज्य गुरुवर के साथ जवान क्या वृद्ध से वृद्ध साधुओं ने पैदल करने का साहस बनाया और साहस ही क्या बनाया सफल रहे। ९ का अंक शाश्वत है ९ कि.मी. की चढ़ाई है और साधु भी ९० हैं। ९+०=९ अगवानी १८ तारीख को हुई– १+८=९ यह भी शाश्वत अंक रहा। सन् २०१८ अंत के १८ लो– १+८=९ शाश्वत स्मरणीय आपके चातुर्मास पर यही भावना है– पुन: पुन: तीर्थराज पर पधारें और वंदनीयों को साहस व आशीष प्रदान करते रहें। आपके आने से यहाँ और भी खुशहाली आई है, आती रहेगी।

❖❖❖

विराग सेतु

बारह-विरागो

(जलधरमाला ऽऽऽऽ ॥॥ऽऽऽऽ = 12 वर्ण)

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गो में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

अस्सिं च वास-चदु-मास-मुणीण जोगा
जोगिंद-साहग-मुणी वि तवस्सि-णंदी।
धम्मस्स सागर-सदा वि सुझाव-भावं
दाएज्ज वीर-अजियो अजियो जिणिंदो।। ३२।।

आचार्य वीरसागर, मुनि अजितसागर, क्षुल्लक जिनेन्द्रसागर, धर्म के सागार साधक क्षुल्लक धर्मसागर, कुमुदनंदी आदि तपस्वी साधक मुनि भी चातुर्मास हेतु थे वे सभी मुनिजन इस वर्षावास में धर्मसाधना को महत्त्व दे रहे थे।

गामा पुरादु णयरादु सु-तावणा वि
धम्मी जणी वि महिला सु-सावगाओ।
अणोण्ण-खेत्त-सददं अणुदंसणत्थं
आगच्छएंति णय-सत्थ-सु-सिक्खणत्थं।। ३३।।

अन्यान्य ग्राम, पर, नगर आदि के क्षेत्रों से श्रावक, श्रविकाएँ, धर्मी जनी, महिलाएँ आदि दर्शनार्थ आती हैं। वे यहाँ आकार नय पद्धति से समन्वय शास्त्र शिक्षण के लिए रुकते हैं।

सिक्खेंति तच्च-परमप्प-पगास-भावं
तच्चत्थ-सुत्त-छहढाल-अणेग-गंथं।
सुद्धं विसुद्ध-परमप्प-अणोवमं च
अप्पं मुणेंति मणसा वयसा सरेंति।। ३४।।

वे श्रावक-श्राविकाएँ यहाँ तत्त्व के परमात्म प्रकाश रूप भाव को सीखते हैं। वे तत्त्वार्थसूत्र, छहढ़ाला आदि अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं। वे शुद्ध, विशुद्ध, परमात्म स्वरूप एवं अनुपम आत्मा का चिंतन करते हैं और मन तथा वचन से उन्हें स्मरण करते हैं।

णाणं पवित्त-सुर-वाहिणि-गंग-णीरं
पत्तेंति धम्म-किरियं च विराग-मग्गं।
केई णएंति वद-पंच-अणुव्वदं च
आराहएं ति मुणि-पंच-महव्वदं च।। ३५।।

यहाँ आकर लोग ज्ञान रूपी पवित्र सुर गंगा के नीर का पान करते हैं, उससे वे धर्मक्रिया और विराग मार्ग की ओर अग्रसर होते हैं। यहाँ आकर कुछ लोग/श्रावक जन श्रावकोचित पंच अणुव्रतों की ओर अग्रसर होते हैं और कुछ लोग/मुनि साधक पंच महाव्रतों की साधना में लीन होते हैं।

संघे जिणिंद-जिद-खुल्लग-लंकिदो वि
सड्ढा-जुदा हि-गुण-राहग-साहणत्तो।
दिक्खं मुणिं च अणुरोहदि सच्छ-भावं
सो त्ति त्ति-वंदना-णमोत्थु णमोत्थु पुव्वं।। ३६।।

संघ में ब्र. दिनेश ने क्षुल्लक दीक्षा ली, वे जिनेन्द्रसागर क्षुल्लक बने श्रद्धा युक्त गुणों के आराधक, साधना में रत श्रद्धाशील हुए ही स्वच्छ भाव पूर्वक मुनि दीक्षा के लिए त्रिविध नमोऽस्तु करते हैं।

सो संजमी मुणि-विराग-सदा मुणेदि
अम्हे गुरु त्ति अहिपुज्जय-वीर-सूरी।
दिक्खेज्ज सो ण हु अहं इध जोग्ग अम्हि
आणा पमाण-गुण जेट्ठ-इमो हि अत्थि।। ३७।।

वे संयमी मुनि विरागसागर तो सदा सोचते कि हमारे गुरु अभी हैं, वे अतिपूज्य हैं। वे आचार्य वीरसागर तो दीक्षा दे सकते हैं, मैं नहीं, मैं मुनि दीक्षा देने योग्य भी नहीं। वे विरागसागर गुरु आज्ञा के प्रमाण को उत्तम मानते हैं।

णिच्चं जिणिंद-गुरु-भत्ति-जुदो हि तत्थ
सज्झाय-सत्थ-वयणे वि पडिक्कमे वि।
दिक्खं मुणिं च अणुरोहदि सड्ढ-पुव्वं
चिंतेज्ज सो हवहिदे गुरु-आण जुत्तो।। ३८।।

वे जिनेन्द्र क्षुल्लक गुरु भक्ति युक्त शास्त्र स्वाध्याय या प्रतिक्रमण आदि के समय श्रद्धापूर्वक मुनि दीक्षा का अनुरोध करते हैं। वे विरागसागर इस पर चिंतन करते और फिर जो गुरु आज्ञा हो वही सर्वोपरि होगी ऐसा विचार करते हैं।

जस्सि च दिट्ठि-समए रद-सत्थ-अत्थं
दाएज्ज सो वि अधुणा मुणि-दिक्ख-जोग्गा।
सम्माणुसीलण-धणी वि विराग-साहू
होस्सेदि दिक्खय-अटुंबर-एगर त्ते।। ३९।।

जिसकी दृष्टि समय पर केन्द्रित थी, जो शास्त्र के रहस्य को उद्घाटित करती थी, वही दृष्टि मुनि दीक्षा देने योग्य बन गई। सो ठीक ही है जो सम्यक् अनुशीलन के धनी होते हैं, वे विराग को देते हैं। वे विरागसागर मुनि ११ अक्टूबर को मुनि दीक्षा होगी ऐसी घोषणा करते हैं।

सोहग्ग-सालि-पुरवासि इमादु सव्वे
राजिंद-बंहचरियो अविखुल्लगो वि।
कल्लाण-मग्ग-गहणं अणुरोहदे सो
संघस्स सव्व-मुणि-अच्छरएज्ज पत्तं।। ४०।।

सन् १९८९ को चातुर्मास सफल था, अब भिण्ड के पुरवासी इस घोषणा से अति हर्षित थे। इसी बीच ब्र. राजेन्द्र भी क्षुल्लक दीक्षा का अनुरोध करते हैं। वे भी कल्याण मार्ग ग्रहण की इच्छा रखते हैं। इस पर संघ के सभी मुनि जन आश्चर्य चकित थे।

समाचार

सम्मेद शिखर मधुवन में गुरु पूर्णिमा उत्सव में इतिहास रचा

२७ जुलाई २०१८ को सम्मेद शिखर जी मधुवन में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में १०० से अधिक साधु साध्वियों की उपस्थिति में गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया। सम्मेद शिखर जी के इतिहास में प्रथम बार सभी साधु-साध्वियों ने एक साथ एक स्थान पर एक ही मंच पर उपस्थित है। गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया। प्रात: काल की वेला में पू. आचार्य संभव सागर जी महाराज ससंघ, पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी ससंघ पू. आचार्य निरंजन सागर जी , पू. आचार्य तन्मय सागर जी, ससंघ आर्यिका सुरत्नमती माताजी ससंघ आदि के १०० से अधिक साधु साध्वियों में त्रिकाल चौबीस मंदिर में परम्पराचार्य श्री महावीर कीर्ति पू.आचार्य श्री विमलसागर जी, आचार्य श्री भरत सागर आदि गुरुओं की चरण वंदनाकर पू.आचार्य विमलसागर जी महाराज के समाधि स्थल पर सभी ने आचार्य भक्ति पूर्वक चरण वंदना की। पू. विमलसागर जी महाराज के चरणों की मूर्ति की शान्तिधारा पूर्वक अभिषेक सम्पन्न हुआ। पश्चात् त्रियोग आश्रम में आचार्य आदि सागर जी आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के चरणों का अभिषेक एवं स्थविराचार्य श्री संभव सागर जी महाराज तथा गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का पाद प्रक्षालन कर पूजन की गई। दोपहर को आयोजित धर्म सभा में सभी आचार्यों साधु-साध्वियों ने तेरह पंथी धर्मशाला में एक मंच पर उपस्थित हो गुरु पूर्णिमा उत्सव में गौतम गणधर की पूजन व पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का पाद प्रक्षालन कर पूजन की। कमेटी द्वारा पू. गणाचार्य श्री को नवीन पिच्छी भेंट करने लाई गई। जिसे सभी साधु-साध्वियों द्वारा पू. गणाचार्य को भेंट की। पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की पुरानी पिच्छी बा.ब्र. ज्योति दीदी को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आर्यिका सुखनश्री माता जी एवं आचार्य श्री तन्मय सागर जी ने प.पू. गणाचार्य श्री के प्रति अपनी विनयाजंली अर्पित की। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने अपने अमृतमयी उद्‌बोधन में गुरु पूर्णिमा का का महत्व बताते हुए। आज दिन इन्द्रभूति गौतम को भगवान महावीर जैसे गुरु प्राप्त हुए। मनुष्य को जीवन में गुरु भक्ति ही उठाती है। आज तक जिनकी भी उन्नति हुई है वह गुरु भक्ति से ही हुई है। इसलिये हम किसी एक को नहीं ३ कम नौ करोड़ रत्नत्रय धारी साधुओं के प्रति श्रद्धा से गुरु मानकर पूजन भक्ति कर अपना जीवन सार्थक करना चाहिये। कार्यक्रम के अन्त में तेरह पंथी कोठी के अधिकारियों ने सभी का आभार माना।

वीर शासन जयन्ति महोत्सव मनाया गया

दिनांक २८ जुलाई को तेरह पंथी धर्मशाला के प्रवचन में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में भगवान महावीर स्वामी प्रथम देशना दिवस पर शासन जयन्ती महोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर ब्र. प्रदीप भैया परिवार द्वारा भगवान महावीर स्वामी विधान का आयोजन किया गया। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी ससंघ की मालपुरा से सम्मेद शिखर तक की विशाल पदयात्रा के निर्विघ्न समापन के उपलक्ष में संघपति श्री अशोक कुमार सुराशाही एवं श्री भंवरलाल जी मालपुरा द्वारा श्री सम्मेद शिखर विधान सम्पन्न किया गया। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का पाद प्रक्षालन तेरह पंथी कमेटी एवं श्री विष्णु जी निवाई व संघपति भवरलाल जी द्वारा किया गया। पू. गुरुदेव को शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य भी राजकुमार जी अजयगढ़ को प्राप्त हुआ। पू. गणाचार्य श्री की अष्टद्रव्य से पूजन की गई। सभी साधुओं को शास्त्र भेंट किये गये। प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने प्रवचन में भगवान महावीर स्वामी को योग शिष्य की प्राप्त होने पर अपनी प्रथम देशना दी उसका सार जन-जन के कल्याणार्थ सुनाया।

रमेश जैन, मधुवन

चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना

२९ जुलाई रविवार को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ९० पिच्छीओं के विशाल चतुर्विध संघ का इतिहास में प्रथमवार इतने बड़े संघ को चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना सम्मेद शिखर जी में हुई।

देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालु सहित तेरह पंथी कोठी एवं बंगाल विहार, उड़ीसा तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी को श्रीफल भेंट कर तेरह पंथी कोठी मधुवन में २०१८ का वर्षायोग करने के लिये प्रार्थना की प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने मंगल आशीर्वाद के साथ चातुर्मास मंगल कलश स्थापना करने की स्वीकृति प्रदान की। चातुर्मास का मुख्य कलश श्री नेमीचन्द्र राजेश कुमार जी, राकेश जी अभिषेक जी गंगवाल, कडेल परिवार कलकता जयपुर द्वितीय कलश श्री कमल पहाडिया महामंत्री तेरह पंथी कोठी, श्री संजीव जी मनीष जी, प्रतीक जी, प्राची जैन, लखनऊ तीसरा कलश श्री सुरेश कुमार जी, महेन्द्र कुमार जी, झांझरी कोडरमा, चतुर्थ एवं पंचम कलश श्री प्रदीप जी जैन, श्रीमती सरला जैन कानपुर एवं छठवां श्रेयांस गिरि कलश श्री विजय कुमार, राजेश कुमार बड़जात्या गया द्वारा स्थापित किया गया।

श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न

त्रियोग आश्रम मधुवन में पू. स्थविराचार्य श्री संभवसागर जी एवं प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ९० पिच्छी के पावन सान्निध्य में दिनांक ९ अगस्त से १६ अगस्त २०१८ तक श्री सिद्ध चक्र मण्डल विधान का भव्य आयोजन श्री रामस्वरूप जी राजेन्द्र कुमार जी मोदी परिवार फागी जयपुर (राजस्थान) द्वारा किया गया। जो सानन्द सम्पन्न हुआ।

कपिल जैन, मधुवन

श्वेताम्बर संतों से मिलन

१६ अगसत १८ मधुवन में श्वेताम्बर संत श्री राजेन्द्र जी सूरी के शिष्य श्री राज सुरी म.सा. ससंघ ने प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज से वात्सल्य पूर्वक मिलन कर मंगल आशीर्वाद ग्रहण किया।

प्रदीप जैन, कानपुर

शाश्वत तीर्थ पर हुआ ऐतिहासिक ध्वजा रोहण

१६ अगस्त २०१८ को शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन में श्री बाहुवली मंदिर के प्रांगण में प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महामुनिराज ससंघ ९० पिच्छी एवं आचार्य श्री निरंजन सागर जी, आचार्य श्री तन्मय सागर जी, आचार्य श्री धर्मसागर जी के पावन सान्निध्य में ५४ फुट के ध्वज दण्ड पर १०८ वर्गफुट की धर्म ध्वजा को फहराने का श्री को सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने मंगलमयी प्रवचन में कहा कि इस धर्मध्वजा से श्री सम्मेद शिखर जी की शोभा बढ़ेगी। आचार्य श्री विद्यासागर जी के संयम स्वर्णिम वर्ष के साथ पू. आचार्यी श्री विमलसागर जी महाराज के रजत पुण्य तिथि वर्ष का पूर्व से ही विशाल ध्वजा रोहण हो रहा है। कार्यक्रम का आयोजन श्री दिग. जैन अग्रवाल समाज द्वारा श्री दिग. जैन बीस पंथी कोठी के अन्तर्गत किया गया।

ऋषभ जैन, तिलैया

भगवान श्री पार्श्वनाथ जी मोक्षकल्याणक मनाया

दिनांक १७ अगस्त २०१८ श्रावण शुक्ल को शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर श्री मधुवन में २३वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान का २८६६वां निर्वाण महोत्सव मनाया गया। लाखें श्रद्धालुओं का देश के कोने कोने से भगवान का निर्वाण महोत्सव मनाने सिद्धक्षेत्र पर आये। श्री सम्मेद शिखर जी के समन्तभद्र कूट पर निर्वाण लाडू चढ़ाने हेतु श्रद्धालुओं का १६ अगस्त के शाम से ही पर्वत पर जाना प्रारंभ हो गया। १७ को प्रात: लाडू चढ़ाने वालों की लम्बी कतार थी। १७ अगस्त को

प्रात: १० बजे मध्यलोक मंदिर मधुवन प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज, आचार्य श्री निरंजन सागर जी, आचार्य श्री तन्मय सागर जी, आचार्य धर्मभूषण जी के पावन सान्निध्य १०८ पिच्छी के पावन सान्निध्यमें भगवान का अभिषेक कर लाडू चढ़ाया गया। दोपहर ३ बजे तरहपंथी कोठी के पुष्पदंत जिनालय पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज एवं बालाचार्य श्री मोक्षसागर जी ससंघ ९५ पिच्छी के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक शान्तिधारा कर २३ किलो का लाडू चढाने का सौभाग्य श्री नेमीचन्द्र जी जैन कोषाध्यक्ष तेरह पंथी कोठी को प्राप्त हुआ।

सन्तोष सेठी, कलकता

श्रवण बेलगोला की यात्रा हेतु लिया आशीर्वाद

२० जुलाई को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ को मालपुरा से सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी तक की विशाल पद यात्रा सानन्द सम्पन्न कर २० जुलाई को शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर जी पर गाजे-बाजे के साथ अभिषेक शान्तिधारा कर तीर्थोकरों के चरणों वंदनाकर भगवान श्री पार्श्वनाथ की टोंक पर इस यात्रा के समापन पर जो आनन्द की सुखद अनुभूति हुई जो आनन्द आया वैसा आगे भी प्राप्त हो। इसके लिये श्री संदीप जैन पुत्र श्री अशोक कुमार जी सुराशाही ने पू. गणाचार्य श्री से निवेदन किया कि हे गुरुदेव मुझे आशीर्वाद दे कि मैं अब पूरे संघ को श्रवण बेलगोला की यात्रा कराऊँ। पू. गणाचार्य श्री ने उनकी उत्तम भावना को देख अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

पप्पू भैया, दरियाबाद

स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

१५ अगस्त २०१८ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ९० पिच्छी के पावन सान्निध्य में ७२ वें स्वतंत्रता दिवस श्री दिग. जैन तेरह पंथी कोठी में महामंत्री श्री कमल किशोर जी पहाडिया द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। पुलिस गार्ड द्वारा ध्वज को सलामी दी गई। कार्यक्रम में देश विभिन्न भागों से आये श्रद्धालुओं के अलावा स्थानीय स्कूलों के छात्रगण उपस्थित थे जिनहें कमेटी द्वारा मिष्ठान वितरण किया गया। इस अवसर प.पू. गणाचार्य श्री ने राष्ट्र को अपने संदेश में राजनेताओं को अनुशासन में रहकर देश का शासन चलाने को कहा अनुशासित व्यक्ति ही देश को अच्छा शासन दे सकता है तभी देश में सुख शांति के साथ उन्नति होगी।

हँसना मना है

१. **महिला (सब्जी वाले से)** - मुझे सब्जी लेना है पर मैं पहले देख लूँ कि ताजी है या नहीं ?
सब्जी वाला - देख लो पर हाथ मत लगाना।
महिला - फिर देखूँगी कैसे ?
सब्जी वाला - आँखों से।

२. **एक मित्र**- तुम्हारा हाथ कैसे टूटा ?
दूसरा मित्र - गिरने से।
एक मित्र- समझ में नहीं आया, तुम जैसा बॉडी बिल्डर कैसे गिर गया ?
दूसरा - अब मैं गिरकर थोड़े ही बताऊँगा।

३. **पति (पत्नी से)** - मुझे ५००/- दे दो, आंखें चैक करवाऊँगा।
पत्नी - आँखों में क्या हुआ ?
पति- दूर की वस्तु नहीं दिखती।
पत्नी - (छत पर ले जाकर) वो चांद दिखा ?
पति- हाँ।
पत्नी - तो कितने दूर की वस्तु देखोगे ?

विराग वर्ग पहेली 33

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

सु	नी	प्र	भा	भु	की	वा	बा
णी	भा	प्र	रा	र्क	श	जो	लू
ह	त्न	प्र	म	ने	वी	ह	का
र	द	ना	म	ध	वा	य	प्र
को	ज	शा	मा	त	मं	दि	भा
अं	र	वं	ब	ना	हा	या	प्र
ह	म	ने	ते	री	कृ	म्र	म
अ	रि	ष्टा	पा	क्रो	पा	ने	धू

विराग वर्ग पहेली 32 के उत्तर

(1) लक्ष्मण
(2) पुरुषोत्तम
(3) जरासंध
(4) तारक
(5) त्रिपृष्ठ
(6) स्वयम्भू
(7) मधुकैटभ
(8) अश्वग्रीव
(9) रावण
(10) श्री कृष्ण

नोट– (1) इसमें आपको नरक के नाम व भूमि दोनों के नाम दिये है। आपको १० नाम खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....